पंचायती राज

सत्यमेव जयते

सशक्त पंचायत सतत् विकास

बदलाव का नेतृत्व

भारत में जमीनी लोकतंत्र का नेतृत्व करती महिलाओं की प्रेरक कहानियाँ

देशभर की निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की साहस, नेतृत्व और बदलाव की यात्रा का उत्सव

Transform Rural India

बदलाव का नेतृत्व

भारत में जमीनी लोकतंत्र का

नेतृत्व करती महिलाओं

की प्रेरक कहानियाँ

देशभर की निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों
की साहस, नेतृत्व और बदलाव की यात्रा का उत्सव

प्रस्तावना

भारत का लोकतंत्र इस सोच पर आधारित है कि शासन लोगों के जितना करीब होगा, वह उतना ही प्रभावी होगा। 73वें संविधान संशोधनके माध्यम से इस सोच को मजबूत किया गया और पंचायती राज संस्थाओं को शासन की तीसरी इकाई के रूप में स्थापित किया गया, ताकि गांवों में फैसले स्थानीय स्तर पर लिए जा सकें।

इस बदलाव की एक महत्वपूर्ण विशेषता पंचायतों में महिलाओं के लिए सीटों का आरक्षण है। पिछले तीस वर्षों में इस व्यवस्था ने लाखों महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में आने और अपने गांव के विकास में सीधे भाग लेने का अवसर दिया है। आज पंचायतों में लगभग आधे प्रतिनिधि महिलाएँ हैं। इस तरह भारत में जमीनी स्तर पर महिलाओं के नेतृत्व का एक बहुत बड़ा समूह तैयार हुआ है।

हालाँकि केवल प्रतिनिधि बन जाना ही पर्याप्त नहीं है। अपनी जिम्मेदारियाँ अच्छी तरह निभाने के लिए प्रतिनिधियों के पास जानकारी, समझ और आत्मविश्वास होना भी जरूरी है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए पंचायती राज मंत्रालय ने निर्वाचित प्रतिनिधियों, विशेष रूप से महिला प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण और क्षमता विकास पर विशेष ध्यान दिया है।

पुनर्गठित राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (आरजीएसए)के तहत मंत्रालय ने पंचायतों को मजबूत बनाने और महिला प्रतिनिधियों के नेतृत्व को विकसित करने के लिए कई पहलें शुरू की हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य प्रतिनिधियों की काम करने की क्षमता बढ़ाना, प्रशासन के साथ बेहतर तालमेल बनाना और महिला प्रतिनिधियों को गांव के फैसलों में आत्मविश्वास के साथ भाग लेने के लिए सक्षम बनाना है।

इस संकलन में देश के अलग-अलग हिस्सों की महिला प्रतिनिधियों की कहानियाँ शामिल हैं। इन कहानियों से पता चलता है कि जब प्रतिनिधियों को सही जानकारी, प्रशिक्षण और सहयोग मिलता है, तो वे अपने प्रतिनिधित्व को प्रभावी नेतृत्व में बदल सकती हैं।

मुझे आशा है कि यह संकलन देशभर की महिला प्रतिनिधियों को प्रेरित करेगा और सशक्त स्थानीय नेतृत्व के माध्यम से गांवों में लोकतंत्र को और मजबूत बनाने में मदद करेगा।

सचिव
पंचायती राज मंत्रालय
भारत सरकार

प्रस्तावना

पुनर्गठित राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (आरजीएसए)के अंतर्गत विशेष रूप से महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों पर ध्यान दिया गया है, जो आज पंचायतों के लगभग आधे प्रतिनिधियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनकी बढ़ती भागीदारी ने जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत किया है। फिर भी कई महिलाएँ पहली बार सार्वजनिक जीवन में आते समय शासन व्यवस्था, प्रशासनिक प्रक्रियाओं और संस्थागत कामकाज से सीमित परिचय के साथ अपनी जिम्मेदारियाँ संभालती हैं।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए मंत्रालय ने"सशक्त पंचायत नेत्री अभियान"के अंतर्गत महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए"बदलाव का नेतृत्व"नामक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया। यह कार्यक्रम अनुभव आधारित और सहभागितापूर्ण सीखने की पद्धति पर आधारित है, जिसका उद्देश्य नेतृत्व क्षमता को मजबूत करना, पंचायत शासन की समझ को गहरा करना और प्रशासनिक व्यवस्था के साथ आत्मविश्वास से काम करने की क्षमता विकसित करना है।

पिछले एक वर्ष के दौरान मुझे इन कार्यक्रमों में भाग ले रही कई महिला प्रतिनिधियों से मिलने और संवाद करने का अवसर मिला, विशेष रूप से विभिन्न राज्यों में आयोजित प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान। इन संवादों ने यह स्पष्ट किया है कि यदि महिलाओं को सही जानकारी, संस्थागत सहयोग और सीखने का अवसर मिले, तो वे अपने नेतृत्व की क्षमता का प्रभावी उपयोग कर सकती हैं।

इस संकलन में प्रस्तुत कहानियाँ इन्हीं प्रयासों के परिणामों को दर्शाती हैं। ये कहानियाँ दिखाती हैं कि प्रशिक्षण के माध्यम से ग्राम सभाओं में भागीदारी कैसे बढ़ सकती है, पंचायतों का कार्य कैसे बेहतर हो सकता है और समुदाय के साथ अधिक समावेशी जुड़ाव कैसे संभव है।

आशा है कि ये अनुभव देशभर की महिला प्रतिनिधियों, प्रशिक्षकों और पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत बनाने के लिए कार्य कर रही संस्थाओं के लिए प्रेरणा और सीख का स्रोत बनेंगे।

अतिरिक्त सचिव
पंचायती राज मंत्रालय
भारत सरकार

भूमिका
(संकलन का उद्देश्य)

पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत बनाना भारत की सहभागितापूर्ण और विकेन्द्रीकृत शासन व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।73वें संविधान संशोधनके लागू होने के बाद पंचायतें ऐसी लोकतांत्रिक संस्थाओं के रूप में उभरी हैं, जो शासन को लोगों के और करीब लाती हैं और समुदायों को स्थानीय विकास में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर देती हैं।

इस सुधार की एक महत्वपूर्ण विशेषता पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रावधान है, जिसने जमीनी स्तर पर शासन में महिलाओं की भागीदारी को काफी बढ़ाया है। आज देशभर में14 लाख से अधिक महिलाएँपंचायतों में निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रही हैं। इनमें से कई महिलाएँ सरपंच, मुखिया, प्रधान या पंचायत अध्यक्ष जैसे नेतृत्व पदों पर भी हैं।

इस उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद, कई महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों को अपनी जिम्मेदारियाँ प्रभावी ढंग से निभाने में अभी भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शासन व्यवस्था की सीमित जानकारी, सामाजिक बाधाएँ और आत्मविश्वास की कमी अक्सर उनके निर्णय लेने और अपनी भूमिका को पूरी तरह निभाने की क्षमता को प्रभावित करती हैं।

इन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए पंचायती राज मंत्रालय नेपुनर्गठित राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (आरजीएसए)के अंतर्गत व्यापक प्रशिक्षण और क्षमता विकास की पहलें शुरू की हैं। इसी प्रयास के तहत देशव्यापी पहल"सशक्त पंचायत नेत्री अभियान"शुरू की गई, जिसके अंतर्गत वर्ष2025में अनुभव आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम"बदलाव का नेतृत्व– महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के क्षमता विकास के लिए मॉड्यूल"प्रारंभ किया गया।

यह संकलन देश के विभिन्न राज्यों की महिला प्रतिनिधियों की कुछ चयनितपरिवर्तन की कहानियोंको प्रस्तुत करता है। इन कहानियों में यह दिखाया गया है कि प्रशिक्षण से मिली सीख को महिलाओं ने कैसे पंचायत के कामकाज को बेहतर बनाने, समुदाय को संगठित करने और स्थानीय विकास से जुड़ी चुनौतियों का समाधान करने में उपयोग किया।

इन अनुभवों को सामने लाने का उद्देश्य देशभर की महिला प्रतिनिधियों को प्रेरित करना और जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाओं को और मजबूत बनाने में योगदान देना है।

परिचय

भारत में महिलाओं का नेतृत्व और जमीनी लोकतंत्र

यह लोकतंत्र का मूल सिद्धांत है कि शासन उन लोगों की आवाज़ को प्रतिबिंबित करे जो उससे सीधे प्रभावित होते हैं। भारत में इस सोच को 73वें संविधान संशोधनके माध्यम से संस्थागत रूप दिया गया, जिसके तहत पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा मिला और ग्रामीण क्षेत्रों में विकेन्द्रीकृत शासन की व्यवस्था स्थापित हुई।

इस संशोधन के माध्यम से गांव, ब्लॉक स्तर और जिला स्तर पर निर्वाचित स्थानीय सरकारों की स्थापना हुई। इससे निर्णय लेने की प्रक्रिया समुदायों के और करीब आई और लोगों को विकास की योजना बनाने और उसे लागू करने में सीधे भाग लेने का अवसर मिला।

इस सुधार की एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी विशेषता पंचायतों में महिलाओं के लिए सीटों का आरक्षण रही है। इस व्यवस्था ने लाखों महिलाओं के लिए सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के द्वार खोले और जमीनी स्तर पर लोकतंत्र की संरचना को नया स्वरूप दिया। बाद में कई राज्यों ने इस आरक्षण को बढ़ाकर 50 प्रतिशततक कर दिया, जिससे स्थानीय शासन में महिलाओं की भागीदारी और मजबूत हुई।

आज देश के हजारों गांवों में महिलाएँ सरपंच, पंचायत अध्यक्ष, वार्ड सदस्य और विभिन्न समितियों की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। उनकी भागीदारी ने शासन में नए दृष्टिकोण जोड़े हैं और स्थानीय संस्थाओं को लोगों की जरूरतों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाया है।

हालाँकि केवल प्रतिनिधित्व से ही प्रभावी नेतृत्व सुनिश्चित नहीं हो जाता। कई नई निर्वाचित प्रतिनिधियों को प्रशासनिक व्यवस्था, वित्तीय प्रक्रियाओं और शासन से जुड़ी व्यवस्थाओं को समझते हुए अपने समुदाय की अपेक्षाओं को भी पूरा करना पड़ता है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पंचायती राज मंत्रालय नेपुनर्गठित राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (आरजीएसए)जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से निर्वाचित प्रतिनिधियों के क्षमता विकास को प्राथमिकता दी है।

इस संकलन में प्रस्तुत कहानियाँ इन प्रयासों के परिणामों को दर्शाती हैं। ये कहानियाँ बताती हैं कि देश के विभिन्न हिस्सों की महिला प्रतिनिधि प्रशिक्षण और ज्ञान का उपयोग करके पंचायत के कामकाज को कैसे मजबूत बना रही हैं और समावेशी ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

विषय सूची

अनुभाग I

नेतृत्व की ओर पहला कदम

1. ग्राम सभा में अपनी आवाज़ पहचानना
   संध्या देवी की नेतृत्व यात्रा....2
2. गाँव का नेतृत्व सीखना
   ऋतु कुमारी की नेतृत्व यात्रा....5
3. खामोशी से नेतृत्व तक
   आरती कुमारी की नेतृत्व यात्रा....7
4. चुनौतियों से नेतृत्व तक
   सुमित्रा की नेतृत्व यात्रा....9
5. जब नेतृत्व के लिए साहस की आवश्यकता होती है
   श्रीमती सुलेखा कुशवाहा की नेतृत्व यात्रा....12

अनुभाग II

अदृश्य बाधाओं को तोड़ते हुए

6. वह सरपंच जिसने केवल औपचारिक मुहर बनने से इनकार किया
   सुनीता देवी की नेतृत्व यात्रा....16
7. जब आत्मविश्वास ने संदेह की जगह ली
   नूर नेहर बेगम की नेतृत्व यात्रा....18
8. गाँव को समझाने की पहल
   ज्योति श्रीवास्तव की नेतृत्व यात्रा....20

अनुभाग III

शासन की संस्थाओं को सशक्त बनाना

9. शासन सीखना
   निहारिका सुकृति की नेतृत्व यात्रा....24
10. गाँव के सात स्तंभ
    सवित्री लोगनाथन की नेतृत्व यात्रा....26
11. शून्य राजस्व से सक्रिय पंचायत तक
    नेतृत्व यात्रा:श्रीमती जीविता रमेश....28

विषय सूची

12. वह गाँव जिसने साथ में योजना बनाई
    नेतृत्व यात्रा:श्रीमती इंदुजा....30
13. अनुभव से सशक्त नेतृत्व तक
    नेतृत्व यात्रा:श्रीमती पूर्णिमा नस्कर....32

अनुभाग IV

विकास जो जीवन बदल दे

14. जमीन वापस पाना, आशा फिर से बनाना
    नेतृत्व यात्रा – गीथा उदयकुमार....36
15. घर सँभालने वाली से गाँव की अगुवा तक
    नेतृत्व यात्रा – सरपंच रामकली सिंह....38
16. गांव के भविष्य की योजना
    नेतृत्व यात्रा – हेमलता वारकडे....40
17. पंचायत को मजबूत बनाना
    नेतृत्व यात्रा – शेख फ़ाज़िला....42

अनुभाग V

जब नेतृत्व बन जाता है आंदोलन

18. महिला जिसने अवैध शराब को चुनौती दी
    काकोली मुखर्जी की नेतृत्व यात्रा....46
19. वह गांव जिसने सूखे को हराया
    सविता सारंगधर पांडे की नेतृत्व यात्रा....48
20. वह गांव जहाँ महिलाओं ने घूंघट हटाया
    डॉ. कश्मीरी की नेतृत्व यात्रा....50
21. एक पंचायत जो महिलाओं को ध्यान में रखकर बनाई गई
    राजलक्ष्मी रवि की नेतृत्व यात्रा....52

निष्कर्ष

महिला नेतृत्व के साथ उभरता जमीनी शासन....55

अनुभाग
I

नेतृत्व की ओर

पहला कदम

कई महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए सार्वजनिक नेतृत्व की यात्रा अक्सर शांत और साधारण तरीके से शुरू होती है।

चुनाव के माध्यम से वे पंचायत में चुनी जाती हैं, अक्सर अपने समुदाय के सहयोग और प्रोत्साहन के साथ। लेकिन पहली बार पंचायत कार्यालय में बैठना या ग्राम सभा की बैठक की अध्यक्षता करना उनके लिए नया और कभी-कभी चुनौतीपूर्ण अनुभव होता है। शासन की दुनिया अपने साथ एक नई भाषा लेकर आती है-जैसे बजट, विकास योजनाएँ, विभागों के साथ समन्वय और संस्थागत जिम्मेदारियाँ।

इस शुरुआती दौर में नेतृत्व का अर्थ बड़े विकास कार्यों या बड़े निर्णयों से नहीं होता। इसकी शुरुआत सबसे पहलेअपनी भूमिका को समझने से होती है। यह समझने से कि पंचायत स्थानीय स्वशासन की एक महत्वपूर्ण संस्था है और एक निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में उनके पास अधिकार के साथ-साथ जिम्मेदारी भी है।

इस खंड में शामिल कहानियाँ नेतृत्व की उसी पहली सीढ़ी को दर्शाती हैं। इनमें उन क्षणों का वर्णन है जब महिला प्रतिनिधियाँ अपनी भूमिका को समझना शुरू करती हैं, सीखने और प्रशिक्षण के माध्यम से आत्मविश्वास प्राप्त करती हैं और सार्वजनिक निर्णय प्रक्रिया में अपनी आवाज को पहचानने लगती हैं।

ये यात्राएँ हमें यह भी याद दिलाती हैं कि नेतृत्व अक्सर पूरी निश्चितता के साथ नहीं, बल्किजिज्ञासा और दृढ़ संकल्प के साथ शुरू होता है। ज्ञान और सहयोग मिलने पर धीरे-धीरे झिझक आत्मविश्वास में बदल जाती है और साधारण भागीदारी नेतृत्व में परिवर्तित हो जाती है।

ग्राम सभा में अपनी आवाज़ पहचानना

संध्या देवी की नेतृत्व यात्रा

नाम: श्रीमती संध्या देवी
पद: प्रधान
ग्राम पंचायत: टिक्कर
ब्लॉक: राजगढ़
जिला: सिरमौर, हिमाचल प्रदेश

झिझक का एक क्षण

जब मैं पहली बार ग्राम सभा की बैठक में प्रधान की कुर्सी पर बैठी, तो मुझे कई उम्मीदों का बोझ महसूस हुआ। गाँव के लोग हमारी पंचायत के विकास से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एकत्र हुए थे। लोग आत्मविश्वास से सड़कों, पानी की व्यवस्था और विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में अपनी बातें रख रहे थे।

मैं ध्यान से सबकी बातें सुन रही थी, लेकिन मन के भीतर थोड़ी झिझक भी थी। हाल ही में, मैं ग्राम पंचायत टिक्कर की प्रधान चुनी गई थी। मैं अपने गाँव के लिए अच्छा काम करना चाहती थी, लेकिन उस समय मुझे पंचायती राज व्यवस्था के कामकाज की पूरी समझ नही थी।

उसी क्षण मुझे महसूस हुआ कि पंचायत में नेतृत्व केवल चुने जाने से ही नहीं आता। इसके लिएजानकारी, आत्मविश्वास और सामूहिक निर्णयों को दिशा देने की क्षमता भी आवश्यक होती है। यही समझ मेरे नेतृत्व की यात्रा की शुरुआत बनी।

बदलाव से पहले

जब मैंने प्रधान का दायित्व संभाला, तब मेरे सामने कई चुनौतियाँ थीं। कई नई निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की तरह मुझे भी शुरू में पंचायती राज संस्थाओं के कामकाज, निर्वाचित प्रतिनिधियों की भूमिका, अधिकार और जिम्मेदारियोंकी सीमित जानकारी थी।

मुझे अन्य पंचायत सदस्यों के साथ मिलकर काम करने, ग्राम सभा की बैठकों का संचालन करने और गाँव से जुड़े मुद्दों को संबंधित विभागों के सामने प्रभावी ढंग से रखने में आत्मविश्वास की कमी महसूस होती थी।

अधिकारियों और कर्मचारियों से संवाद करना भी आसान नहीं था। लोगों की समस्याएँ सुनने के बाद निर्णय लेते समय मैं कई बार हिचकिचाती थी। गलत निर्णय लेने का डर, विभागों के साथ समन्वय की कमी और नेतृत्व का सीमित अनुभव मेरे कार्यकाल के शुरुआती समय की बड़ी चुनौतियाँ हुआ करती थीं। यह स्थिति केवल मेरी ही नहीं थी। कई नई निर्वाचित प्रतिनिधियों, विशेषकर पहली बार सार्वजनिक नेतृत्व में आने वाली महिलाओं को ऐसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

बदलाव की शुरुआत

मेरी यात्रा में बदलाव तब आया जब मुझे पंचायती राज मंत्रालय द्वारा आयोजित महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए **"बदलाव का नेतृत्व"** प्रशिक्षण कार्यक्रममें भाग लेने का अवसर मिला।

यह प्रशिक्षण बहुत ही सहभागी और व्यवहारिकथा। समूह चर्चा, गतिविधियों और भूमिका-अभिनय के माध्यम से हमें समझाया गया कि पंचायतें स्थानीय स्वशासन की संस्थाएँ कैसे काम करती हैं।

इस कार्यक्रम ने हमारी जिम्मेदारियों को स्पष्ट किया और यह समझने में मदद की, कि विकास योजनाएँ, धनराशि और विभिन्न विभाग पंचायत के कामकाज से किस प्रकार जुड़े होते हैं।

प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा यह था कि हमें ग्राम सभा और विभिन्न समितियों की बैठकों का प्रभावी संचालन कैसे किया जाए, यह सिखाया गया। साथ ही यह भी बताया गया कि अलग-अलग विकास कार्यों के लिए किस विभाग और अधिकारी से संपर्क करना चाहिए।

इस जानकारी से मेरी झिझक काफी हद तक दूर हो गई। प्रशिक्षण ने मेरे नेतृत्व कौशल, संवाद क्षमता, समस्या समाधान की समझ और निर्णय लेने की क्षमताको मजबूत किया।

पहल की शुरुआत

प्रशिक्षण के बाद मैंने अपने दायित्वों को अधिक आत्मविश्वास और स्पष्टता के साथ निभाना शुरू किया। अब मैं ग्राम सभा और स्थायी समितियों की बैठकों का संचालन अधिक विश्वास के साथ करने लगी और चर्चाओं में सक्रिय भाग लेने लगी।

पहले जहाँ मैं हिचकिचाती थी, अब मैं पंचायत सदस्यों और गाँव के लोगों को खुलकर अपनी बात रखने और निर्णय प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ।

विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ समन्वय भी बेहतर हुआ। मैंने सीखा कि ब्लॉक और जिला स्तर की बैठकों में गाँव के मुद्दों को स्पष्ट रूप से कैसे उठाया जाए और संबंधित अधिकारियों से सहयोग कैसे लिया जाए। धीरे-धीरे सरकारी अधिकारियों से संवाद करना आसान होता गया।

निर्णय लेने के तरीके में भी बदलाव आया। पहले मुझे गलती होने का डर रहता था। अब मैं पहले समस्या को समझती हूँ, पंचायत सदस्यों से चर्चा करती हूँ और फिर गाँव के हित में सोच-समझकर निर्णय लेती हूँ।

इस प्रशिक्षण ने केवल जानकारी ही नहीं दी, बल्कि यह विश्वास भी मजबूत किया कियदि महिलाओं को सही जानकारी और सहयोग मिले तो वे प्रभावी नेतृत्व कर सकती हैं।

दिखाई देने वाला बदलाव

आत्मविश्वास बढ़ने और बेहतर समन्वय के साथ पंचायत के कामकाज में भी सुधार दिखाई देने लगा।

बैठकों का संचालन अधिक व्यवस्थित होने लगा, चर्चाएँ समुदाय की समस्याओं के समाधान पर अधिक केंद्रित होने लगीं और अधिकारियों के साथ समन्वय भी बेहतर हुआ।

पंचायत प्रशासनिक प्रक्रियाओं और विकास कार्यक्रमों से अधिक सक्रिय रूप से जुड़ने लगी। इन बदलावों से स्थानीय शासन व्यवस्था मजबूत हुई और समुदाय की समस्याओं को हल करने में निर्वाचित प्रतिनिधि की भूमिका अधिक प्रभावी बन गई।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि अब पंचायत में निर्वाचित प्रतिनिधि की भूमिकाऔर अधिक स्पष्ट और प्रभावी रूप से दिखाई देने लगी।

एक व्यक्तिगत अनुभव

जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ तो महसूस करती हूँ कि सबसे बड़ा बदलाव मेरे भीतर आया है। इस प्रशिक्षण ने मुझे समझाया कि नेतृत्व केवल अधिकार का नाम नहीं है। यहजिम्मेदारी, संवाद और लोगों की आवाज़ को सामने लाने का साहसभी है।

आज मैं बैठकों में सक्रिय रूप से भाग ले पाती हूँ, अधिकारियों के साथ समन्वय कर पाती हूँ और ग्राम पंचायत के विकास से जुड़े निर्णय ले पाती हूँ। झिझक से आत्मविश्वास तक की यह यात्रा धीरे-धीरे हुई, लेकिन इसने एक प्रतिनिधि के रूप में मेरी भूमिका को पूरी तरह बदल दिया।

नेतृत्व से सीख

जब महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों कोउचित प्रशिक्षण और संस्थागत सहयोगमिलता है, तो वे केवल प्रतीकात्मक भागीदारी तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि जमीनी स्तर के शासन मेंसक्रिय और प्रभावी नेतृत्वकी भूमिका निभाने लगती हैं।

गाँव का नेतृत्व सीखना

ऋतु कुमारी की नेतृत्व यात्रा

नाम: श्रीमती ऋतु कुमारी
ग्राम पंचायत: बिशुनपुर ओकरी
ब्लॉक: मोदनगंज जिला: जहानाबाद राज्य: बिहार

विश्वास की जिम्मेदारी

जब मैं बिशुनपुर ओकरी ग्राम पंचायतकी प्रतिनिधि के रूप में चुनी गई, तो मुझे उस जिम्मेदारी का गहरा एहसास हुआ जो गाँव के लोगों ने मुझ पर भरोसा करके मुझे सौंपी थी।

गाँव के लोगों को उम्मीद थी कि मैं उनकी समस्याओं और जरूरतों को सामने रखूँगी और पंचायत के विकास में योगदान दूँगी। लेकिन शुरुआती दिनों में मुझे कई बार यह समझ नहीं आता था कि इस जिम्मेदारी को सही तरीके से कैसे निभाया जाए।

सार्वजनिक नेतृत्व मेरे लिए नया अनुभव था। मुझे निर्वाचित प्रतिनिधि की भूमिका और जिम्मेदारियों की पूरी जानकारी नहीं थी और विकास से जुड़े कार्यों में मेरी भागीदारी भी सीमित थी। गाँव के लोगों से संवाद करना और अधिकारियों के साथ समन्वय करना भी मेरे लिए आसान नहीं था।

कई बार बैठकों में बोलने से पहले मैं हिचकिचाती थी, क्योंकि मुझे लगता था कि शायद मेरे पास सही निर्णय लेने के लिए पर्याप्त जानकारी नहीं है। लेकिन मुझे यह भी समझ आ रहा था कि

बदलाव की शुरुआत

मेरी यात्रा में बदलाव तब आया जब मुझे महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित “बदलाव का नेतृत्व” प्रशिक्षण कार्यक्रममें भाग लेने का अवसर मिला।

इस प्रशिक्षण ने मेरे लिए समझ का एक नया द्वार खोल दिया। पहली बार मुझे पंचायत प्रतिनिधियों के कर्तव्यों, अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में विस्तार से जानकारी मिली। इस कार्यक्रम में यह भी समझाया गया कि पंचायती राज संस्थाएँ कैसे काम करती हैं और ग्राम सभा सहभागितापूर्ण शासन का केंद्र क्यों है।

चर्चाओं और व्यवहारिक अभ्यासों के माध्यम से हमने सीखा कि बैठकों का संचालन कैसे किया जाता है, समुदाय को कैसे जोड़ा जा सकता है और निर्वाचित प्रतिनिधि स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए सरकारी अधिकारियों और विभिन्न विभागों के साथ कैसे काम कर सकते हैं।

जो बातें पहले कठिन और जटिल लगती थीं, वे धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगीं। सबसे महत्वपूर्ण बदलाव यह था कि मैंने खुद को एक नई दृष्टि से देखना शुरू किया-अब मैं अपनी भूमिका को लेकर असमंजस में रहने वाली व्यक्ति नहीं थी, बल्कि आत्मविश्वास के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाने वाली प्रतिनिधिके रूप में खुद को देखने लगी।

अपनी आवाज़ पहचानना

प्रशिक्षण के बाद जब मैं पंचायत में वापस आई, तो मेरे भीतर नई स्पष्टता और आत्मविश्वास था। धीरे-धीरे मैंने ग्राम सभा और स्थायी समितियों की बैठकों का संचालन अधिक सक्रियता से करना शुरू किया।

मैं चर्चाओं में अधिक आत्मविश्वास के साथ भाग लेने लगी और गाँव के लोगों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर अन्य पंचायत सदस्यों के साथ मिलकर काम करने लगी।

मैंने ब्लॉक और जिला स्तर की बैठकों में भी भाग लेना शुरू किया, जहाँ विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ विकास से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होती है।

हर बैठक मेरे लिए सीखने और योगदान देने का अवसरबन गई। समय के साथ मेरी निर्णय लेने की क्षमता मजबूत हुई और अधिकारियों के साथ समन्वय करना भी आसान होता गया। जो काम पहले कठिन और डराने वाले लगते थे, वे धीरे-धीरे मेरी दैनिक जिम्मेदारियों का हिस्सा बन गए।

अभ्यास से सीख

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की सबसे उपयोगी बात यह थी कि इसे बहुत ही सरल और सहभागितापूर्ण तरीके से आयोजित किया गया था।

सत्रों में सरल भाषा का उपयोग किया गया, भूमिका-अभिनय, समूह चर्चा और फ्लिप चार्ट जैसे दृश्य माध्यमों का इस्तेमाल किया गया। इन तरीकों से शासन से जुड़े विषयों को समझना और उन्हें व्यवहार में लागू करना हमारे लिए आसान हो गया।

सिर्फ व्याख्यान सुनने के बजाय हमने बैठकें कैसे संचालित करें, विकास के मुद्दों पर चर्चा कैसे करें और प्रतिनिधियों के रूप में मिलकर कैसे काम करें, इसका अभ्यास भी किया।इन अनुभवों ने ज्ञान को आत्मविश्वास में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सीख और विकास की यात्रा

आज जब मैं अपनी यात्रा की शुरुआत को याद करती हूँ, तो मुझे महसूस होता है कि इस दौरान मैंने कितना कुछ सीखा और विकसित किया है।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने मुझे पंचायत नेतृत्व की जिम्मेदारियों को समझने में मदद की और शासन की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने का आत्मविश्वास दिया। इससे मेरी समुदाय का प्रतिनिधित्व करने और गाँव के विकास में योगदान देने की क्षमता भी मजबूत हुई।

"बदलाव का नेतृत्व" जैसे कार्यक्रम महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। यदि ऐसे प्रशिक्षण नियमित रूप से आयोजित किए जाएँ और इनमें अच्छे काम करने वाली पंचायतों के अध्ययन भ्रमण भी शामिल हों, तो जमीनी स्तर पर नेतृत्व को और मजबूत किया जा सकता है।

नेतृत्व से सीख

जब महिला प्रतिनिधियों को सही जानकारी और सहयोग मिलता है, तो वे झिझक से आगे बढ़कर सशक्त नेतृत्व की भूमिका निभाती हैं और गाँव के शासन एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

खामोशी से नेतृत्व तक

आरती कुमारी की नेतृत्व यात्रा

नाम: श्रीमती आरती कुमारी
पद: निर्वाचित प्रतिनिधि
ग्राम पंचायत: मिश्रौलिया
ब्लॉक: डुमरा   जिला: सीतामढ़ी   राज्य: बिहार

वह बैठक जब मैंने बोलने का निर्णय लिया

चुनाव के बाद शुरुआती दिनों में, मैं पंचायत बैठकों में शामिल होती थी, लेकिन अक्सर चुप ही रहती थी। मैं ध्यान से सुनती थी कि कैसे चर्चा एक मुद्दे से दूसरे मुद्दे की ओर बढ़ती है-जैसे विकास कार्य, सरकारी योजनाएँ और प्रशासन से जुड़े विषय।

ये चर्चाएँ महत्वपूर्ण थीं, लेकिन उनमें सक्रिय रूप से भाग लेने को लेकर मेरे मन में झिझक रहती थी।

मैं अपने गाँव के लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनी गई थी, फिर भी कई बार मुझे लगता था कि शायद मुझे पंचायत व्यवस्था की पूरी समझ नहीं है, इसलिए मैं आत्मविश्वास के साथ अपनी बात नहीं रख पाती थी। पहली बार निर्वाचित हुई कई अन्य प्रतिनिधियों की तरह मैं भी यह सीख रही थी कि वास्तव में नेतृत्व का अर्थ क्या होता है।

चुनौती को समझना

अपने कार्यकाल के शुरुआती समय में मुझे कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। मुझेपंचायती राज की प्रक्रियाओं और शासन व्यवस्थाकी सीमित जानकारी थी, इसलिए सार्वजनिक बैठकों में बोलने से पहले मैं अक्सर हिचकिचाती थी।

पंचायत बैठकों में चर्चा को संभालना और सक्रिय रूप से भाग लेना भी मेरे लिए कठिन था, क्योंकि नेतृत्व और बैठक संचालन का मुझे पहले कोई अनुभव नहीं था।

एक और चुनौती थी विभिन्न विभागों और अन्य संबंधित पक्षों के साथ समन्वय करना। कई बार मुझे यह समझ नहीं आता था कि किसी विशेष विकास कार्य के लिए किस विभाग से संपर्क किया जाए। इसके कारण पंचायत के निर्णय लेने और कामों के क्रियान्वयन में भी कभी-कभी देरी हो जाती थी।

इन चुनौतियों ने मुझे यह महसूस कराया कि यदि मुझे अपने समुदाय की सही ढंग से सेवा करनी है, तो मुझे शासन की व्यवस्था को बेहतर ढंग से समझना होगा और अपने प्रतिनिधि के रूप में आत्मविश्वास भी विकसित करना होगा।

बदलाव की शुरुआत

मेरी यात्रा में महत्वपूर्ण बदलाव तब आया जब मुझे महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित “बदलाव का नेतृत्व” प्रशिक्षण कार्यक्रममें भाग लेने का अवसर मिला।

इस प्रशिक्षण में हमें निर्वाचित प्रतिनिधियों कीभूमिका, अधिकार और जिम्मेदारियोंके बारे में व्यवहारिक जानकारी दी गई। समूह गतिविधियों, संवादात्मक सत्रों और अभ्यासों के माध्यम से हमने शासन की प्रक्रियाओं और समुदाय की भागीदारी को बेहतर ढंग से समझा।

इस कार्यक्रम ने हमें संवाद कौशल, टीम में काम करने की क्षमता, समन्वय और समस्या समाधान जैसे महत्वपूर्ण कौशल भी सिखाए। साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि पंचायत प्रतिनिधि विभिन्न विभागों और अधिकारियों के साथ मिलकर स्थानीय विकास से जुड़े मुद्दों का समाधान कैसे कर सकते हैं।

मेरे लिए यह प्रशिक्षण केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं था। इसने मेरे भीतर मौजूद झिझक को दूर करने में भी मदद की।

आगे बढ़ने की शुरुआत

प्रशिक्षण से लौटने के बाद मैंने पंचायत की बैठकों और गतिविधियों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया। पहले जहाँ मैं चुप रहती थी, अब मैंने गाँव के मुद्दों पर अपनी राय रखना और अन्य पंचायत सदस्यों के साथ मिलकर समाधान पर चर्चा करना शुरू किया।

धीरे-धीरे मेरा आत्मविश्वास बढ़ने लगा। मैंने समुदाय के लोगों से अधिक संवाद करना शुरू किया, उनकी समस्याएँ सुनीं और उन्हें विकास से जुड़े मुद्दों पर चर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

एक नया आत्मविश्वास

समय के साथ जो बैठकें पहले मुझे कठिन और डराने वाली लगती थीं, वे अब चर्चा और निर्णय लेने के परिचित मंच बन गईं।

मुझे यह समझ में आया कि नेतृत्व की शुरुआत में सब कुछ जानना जरूरी नहीं होता। नेतृत्व सीखने, संवाद करने और समुदाय के प्रति प्रतिबद्ध रहने से धीरे-धीरे विकसित होता है।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने मुझे वही आत्मविश्वास खोजने में मदद की।

एक व्यक्तिगत अनुभव

आज जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो महसूस करती हूँ कि सबसे बड़ा बदलाव मेरे भीतर आया है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने मुझे अपने दायित्वों को प्रभावी ढंग से निभाने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास और नेतृत्व कौशल प्रदान किए।

आज मैं अपने दायित्व को एक अवसर के रूप में देखती हूँ, ऐसा अवसर जिसके माध्यम से मैं गाँव के विकास में योगदान दे सकती हूँ और शासन में समुदाय की भागीदारी को मजबूत बना सकती हूँ।

जो यात्रा झिझक से शुरू हुई थी, वह धीरे-धीरे आत्मविश्वास में बदल गई। कई बार नेतृत्व की शुरुआत केवल अपनी बात कहने के साहस से होती है।

नेतृत्व से सीख

जब महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों कोसही जानकारी, प्रशिक्षण और संस्थागत सहयोगमिलता है, तो वे चुप्पी से आगे बढ़कर नेतृत्व की भूमिका निभाने लगती हैं और पंचायतों के लोकतांत्रिक संचालन में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

चुनौतियों से नेतृत्व तक

सुमित्रा की नेतृत्व यात्रा

नाम: श्रीमती सुमित्रा
पद: सरपंच
ग्राम पंचायत: गुटोली
ब्लॉक: गीदम जिला: दंतेवाड़ा राज्य: छत्तीसगढ़

शुरुआत में चुनौतियों का सामना

जब सुमित्रा ग्राम पंचायत गुटोली की सरपंच चुनी गईं, तो उनके सामने जिम्मेदारियों के साथ कई चुनौतियाँ भी थीं। ग्रामीण शासन में चुनी गई कई अन्य महिला प्रतिनिधियों की तरह उन्हें भी एक जटिल सामाजिक और प्रशासनिक माहौल में काम करना पड़ा।

अपने कार्यकाल के शुरुआती दिनों में पंचायत की बैठकों में आत्मविश्वास के साथ भाग लेना और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय होना उनके लिए आसान नहीं था। गाँव के कई लोग अभी भी इस बात के अभ्यस्त नहीं थे कि पंचायत का नेतृत्व एक महिला कर रही है।

सुमित्रा के लिए प्रभावी नेतृत्व की यात्रा इन चुनौतियों को समझने और धीरे-धीरे उनका समाधान सीखने से शुरू हुई।

चुनौतियों को समझना

नेतृत्व के शुरुआती दौर में सुमित्रा को अपनी जिम्मेदारियाँ निभाने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ा। सबसे बड़ी चुनौती निर्णय लेने में हस्तक्षेप की थी। परिवार के पुरुष सदस्य, जिनमें उनके पति भी शामिल थे, अक्सर पंचायत के फैसलों को प्रभावित करने या नियंत्रित करने की कोशिश करते थे। इससे पंचायत की निर्वाचित प्रमुख के रूप में स्वतंत्र रूप से काम करना उनके लिए कठिन हो जाता था।

प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ भी उन्हें जटिल लगती थीं। बजट का प्रबंधन और सरकारी ऑनलाइन पोर्टलों का उपयोग उनके लिए नया था, जिससे सरकारी कामकाज को सुचारु रूप से करना मुश्किल हो जाता था।

इसके साथ ही उन्हें सार्वजनिक जिम्मेदारियों और पारिवारिक कर्तव्यों के बीच संतुलन बनाने की चुनौती का भी सामना करना पड़ा। गाँव की महिलाओं को ग्राम सभा की बैठकों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना भी आसान नहीं था, क्योंकि कई महिलाएँ सार्वजनिक रूप से बोलने में हिचकिचाती थीं।

बदलाव की शुरुआत

सुमित्रा की नेतृत्व यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब उन्होंने महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित "बदलाव का नेतृत्व" विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

यह तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम उन्हें अपनी जिम्मेदारियों को अधिक प्रभावी ढंग से निभाने के लिए व्यावहारिक ज्ञान और आत्मविश्वास प्रदान करने वाला साबित हुआ।

प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने 73वें संविधान संशोधनके बारे में सीखा, जिसने पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत किया और स्थानीय शासन में महिलाओं की भागीदारी के महत्व को रेखांकित किया।

उन्हें कोष, कार्य और कार्यकर्त्ता की अवधारणा के बारे में भी स्पष्ट जानकारी मिली, जो पंचायतों के कार्य संचालन को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन सत्रों से उन्हें यह समझ आया कि वे केवल प्रतीकात्मक प्रतिनिधि नहीं हैं, बल्कि पंचायत का नेतृत्व करने वाली मुख्य निर्णयकर्ता हैं।

शासन में सीख का उपयोग

प्रशिक्षण से लौटने के बाद सुमित्रा ने प्राप्त ज्ञान और कौशल को अपने काम में लागू करना शुरू किया।

उन्होंने स्वयं ग्राम सभा की बैठकों को बुलाना और उनकी अध्यक्षता करना शुरू किया, ताकि गाँव के विकास से जुड़े मुद्दों पर खुलकर चर्चा हो सके। बैठकों का संचालन करने और अधिकारियों से बातचीत करने में उनका आत्मविश्वास काफी बढ़ गया।

सुमित्रा ने ग्राम पंचायत विकास योजना (GPDP) तैयार करने की प्रक्रिया में भी सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया। पंचायत के बजट में संसाधनों का आवंटन करते समय उन्होंने गाँव की आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी।

इसके अलावा उन्होंने सरकारी अधिकारियों से मिलने और पंचायत की जरूरतों को उनके सामने रखने का साहस भी विकसित किया।

बढ़ता आत्मविश्वास और पहचान

इस प्रशिक्षण ने न केवल सुमित्रा की प्रशासनिक क्षमता को मजबूत किया, बल्कि उनके आत्मविश्वास और नेतृत्व की पहचान को भी नई दिशा दी।

अब वे पंचायत के बजट से जुड़े सवाल पूछने, अपनी राय स्पष्ट रूप से रखने और बैठकों में विरोध का सामना करने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करने लगीं।

लैंगिक भूमिकाओं को लेकर उनका दृष्टिकोण भी बदलने लगा। उन्होंने अपने परिवार में घर की जिम्मेदारियों को अधिक संतुलित तरीके से साझा करने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू किया।

जैसे-जैसे उनका नेतृत्व मजबूत होता गया, वैसे-वैसे गाँव के लोग भी उनके प्रयासों को पहचानने लगे। पंचायत के काम में उनकी सक्रिय भूमिका के कारण उन्हें गाँव में अधिक सम्मान और पहचान मिलने लगी।

व्यक्तिगत अनुभव

सुमित्रा की झिझक से आत्मविश्वासी नेतृत्व तक की यात्रा यह दिखाती है कि स्थानीय शासन में महिलाओं के लिए क्षमता-विकास कितना महत्वपूर्ण है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम महिला प्रतिनिधियों को वह ज्ञान, आत्मविश्वास और प्रशासनिक कौशल प्रदान कर सकते हैं, जिनकी मदद से वे अपनी जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभा सकें।

उनका अनुभव यह भी दर्शाता है कि जब महिला प्रतिनिधियों को सही समर्थन और प्रशिक्षण मिलता है, तो वे सामाजिक बाधाओं को पार करते हुए गाँव के विकास में सक्रिय योगदान दे सकती हैं।

नेतृत्व से सीख

प्रभावी स्थानीय शासन केवल निर्वाचित पदों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि निर्वाचित प्रतिनिधि के आत्मविश्वास और क्षमता पर भी आधारित होता है।

"बदलाव का नेतृत्व" जैसे क्षमता-विकास कार्यक्रम महिला प्रतिनिधियों को सशक्त बनाते हैं, जिससे वे स्वतंत्र निर्णय लेने वाली और ग्रामीण विकास को आगे बढ़ाने वाली प्रभावी नेता बन सकें।

नेतृत्व की आवाज़

"आज मुझे गर्व और जिम्मेदारी दोनों महसूस होती है। यदि मुझे यह प्रशिक्षण न मिला होता, तो मेरे अंदर आत्मविश्वास की कमी रहती और मैं ग्राम पंचायत विकास योजना (GPDP) की योजना नहीं बना पाती।"

जब नेतृत्व के लिए साहस की आवश्यकता होती है

श्रीमती सुलेखा की नेतृत्व यात्रा

नाम: श्रीमती सुलेखा कुशवाहा
पद: ग्राम पंचायत प्रधान
ब्लॉक : पतारा
जिला: कानपुर नगर
राज्य: उत्तर प्रदेश

श्रीमती सुलेखा कुशवाहा की नेतृत्व यात्रा

जब सुलेखा कुशवाहा अपने ग्राम पंचायत की प्रधान बनीं, तब पूरे गाँव की उम्मीदें उनके कंधों पर आ गई। गाँव के लोग अपनी-अपनी समस्याएँ लेकर उनके पास आने लगे, किसान खेती से जुड़ी परेशानियों के समाधान चाहते थे, कई परिवार रोजमर्रा की कठिनाइयों से जूझ रहे थे, और गाँव की महिलाएँ सुरक्षा तथा सामाजिक समस्याओं को लेकर अपनी चिंताएँ साझा कर रही थीं।

लेकिन नेतृत्व की भूमिका में कदम रखना आसान नहीं था। कई नई निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की तरह सुलेखा को भी शुरुआत में प्रशासनिक व्यवस्था जटिल लगी। पंचायत के काम में बैठकें, प्रक्रियाएँ, अधिकारियों से समन्वय और संस्थागत जिम्मेदारियाँ शामिल थीं, जिनसे वह पहले परिचित नहीं थीं।

साथ ही, पुरुष-प्रधान माहौल में काम करने का मतलब था कि हर निर्णय के लिए उन्हें आत्मविश्वास और धैर्य के साथ आगे बढ़ना पड़ता था।

गाँव की चुनौतियाँ

गाँव कई महत्वपूर्ण समस्याओं का सामना कर रहा था। कुछ लोगों में शराब की लत के कारण परिवारों पर असर पड़ रहा था और सामाजिक तनाव भी बढ़ रहा था। चोरी की घटनाएँ और सुरक्षा से जुड़ी चिंताएँ भी लोगों को परेशान करती थीं।

किसानों को अपनी फसल बेचने में भी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। उन्हें अक्सर पतारा, घाटमपुर या कानपुर के बाजारों तक लंबी दूरी तय करके जाना पड़ता था, जिससे समय और पैसे दोनों की अतिरिक्त लागत लगती थी।

यहाँ तक कि सामान्य प्रशासनिक सेवाएँ भी गाँव में आसानी से उपलब्ध नहीं थीं। आय, जाति, निवास, जन्म या मृत्यु प्रमाण पत्र जैसे दस्तावेज बनवाने के लिए लोगों को पंचायत के बाहर जाना पड़ता था। बिजली का बिल जमा करने के लिए भी बाहर के कार्यालयों में जाना पड़ता था।

इन रोजमर्रा की समस्याओं ने यह स्पष्ट कर दिया था कि गाँव में स्थानीय शासन को और मजबूत बनाने की आवश्यकता है।

बदलाव की शुरुआत

सुलेखा की नेतृत्व यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब उन्होंने "बदलाव का नेतृत्व" मॉड्यूल के अंतर्गत आयोजित तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

इस प्रशिक्षण के दौरान उन्हें 73वें संविधान संशोधनके तहत स्थापित पंचायती राज व्यवस्था के बारे में गहराई से समझ मिली।

प्रशिक्षण में उन्हें पंचायत शासन की बुनियादी अवधारणा कोष, कार्य और कार्यकर्ताओंके बारे में बताया गया। साथ ही ग्राम सभा की बैठकों और ग्राम पंचायत की स्थायी समितियों की बैठकों को प्रभावी ढंग से संचालित करने की प्रक्रियाओं की जानकारी भी दी गई।

व्यावहारिक अभ्यास और चर्चा के माध्यम से उन्हें यह समझने में मदद मिली कि शासन की व्यवस्थाएँ कैसे काम करती हैं और स्थानीय स्तर पर निर्णयों को किस तरह लागू किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि इस प्रशिक्षण से उनका आत्मविश्वास काफी बढ़ा।

सीख का उपयोग

प्रशिक्षण से लौटने के बाद सुलेखा ने अपनी सीख को पंचायत के कामकाज में लागू करना शुरू किया।

ग्राम सभा की बैठकें अब नियमित रूप से आयोजित होने लगीं और ग्राम पंचायत की बैठकों को अधिक व्यवस्थित तरीके से संचालित किया जाने लगा।

प्रधान के रूप में उन्होंने बैठकों की अध्यक्षता अधिक आत्मविश्वास के साथ करनी शुरू की और यह सुनिश्चित किया कि जिम्मेदारियाँ स्पष्ट रूप से तय हों, ताकि पंचायत का काम सुचारु रूप से आगे बढ़ सके।

उन्होंने गाँव के स्कूलों और स्वास्थ्य सेवाओं की कार्यप्रणाली पर भी ध्यान देना शुरू किया, ताकि समुदाय के लिए बनी संस्थाएँ प्रभावी ढंग से काम कर सकें।

ब्लॉक और जिला स्तर की बैठकों में भाग लेना भी अब उनके लिए आसान हो गया, क्योंकि वे अधिकारियों से आत्मविश्वास के साथ बातचीत कर पाती थीं और अपने गाँव की जरूरतों को स्पष्ट रूप से सामने रख पाती थीं।

नेतृत्व की यात्रा

सुलेखा की कहानी यह दिखाती है कि नेतृत्व समय के साथ विकसित होता है। जो यात्रा शुरुआत में झिझक के साथ शुरू हुई थी, वह धीरे-धीरे सीख, अनुभव और दृढ़ निश्चय के माध्यम से आत्मविश्वास में बदल गई।

आज वे गाँव की समस्याओं को अधिक स्पष्ट रूप से पहचान पाती हैं और उनके समाधान के लिए संस्थाओं के साथ मिलकर काम कर रही हैं।

नेतृत्व से सीख

जब महिला प्रतिनिधियों को शासन व्यवस्था की सही जानकारी और संस्थाओं के साथ संवाद करने का आत्मविश्वास मिलता है, तो वे मजबूत नेता बनकर अपने समुदाय को सकारात्मक बदलाव की दिशा में आगे बढ़ा सकती हैं।

अनुभाग II

अदृश्य बाधाओं को तोड़ते हुए

संविधान प्रतिनिधित्व की गारंटी देता है, लेकिन प्रभावी नेतृत्व की राह हमेशा आसान नहीं होती।

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों को अक्सर ऐसी अदृश्य बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो लंबे समय से बनी सामाजिक धारणाओं और अपेक्षाओं से जुड़ी होती हैं। कई बार यह माना जाता है कि उनकी भूमिका केवल औपचारिक या प्रतीकात्मक होगी। कुछ परिस्थितियों में समुदाय के लोग भी झिझक महसूस करते हैं, क्योंकि वे महिलाओं को बैठकों की अध्यक्षता करते या विकास से जुड़े मुद्दों पर नेतृत्व करते हुए देखने के आदी नहीं होते।

इन बाधाओं को पार करने के लिए केवल पद या अधिकार पर्याप्त नहीं होते। इसके लिए साहस, निरंतर प्रयास और अपने प्रतिनिधि के रूप में दायित्व को दृढ़ता से निभाने की इच्छा आवश्यक होती है।

इस अनुभाग में शामिल कहानियाँ उन महिलाओं की यात्रा को दर्शाती हैं जिन्होंने धीरे-धीरे अपनी झिझक को नेतृत्व में बदला। संवाद, सामूहिक भागीदारी और क्षमता-विकास कार्यक्रमों से मिले आत्मविश्वास के माध्यम से उन्होंने शासन में अपनी भूमिका को मजबूत किया और अन्य महिलाओं को भी सार्वजनिक निर्णय-प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

ये अनुभव यह दिखाते हैं कि जमीनी लोकतंत्र केवल संस्थाओं के माध्यम से ही नहीं, बल्कि उन लोगों के साहस से भी विकसित होता है जो भागीदारी के दायरे को आगे बढ़ाते हैं।

ये अनुभव यह दिखाते हैं कि जमीनी लोकतंत्र केवल संस्थाओं के माध्यम से ही नहीं, बल्कि उन लोगों के साहस से भी विकसित होता है जो भागीदारी के दायरे को आगे बढ़ाते हैं।

वह सरपंच जिसने केवल औपचारिक मुहर बनने से इनकार किया

सुनीता देवी की नेतृत्व यात्रा

नामः सुनीता देवी

पदः सरपंच

ग्राम पंचायतः गड़ली   ब्लॉकः भट्टू कलां   जिलाः फतेहाबाद, हरियाणा

एक शांत समझ

जब मैं गड़ली ग्राम पंचायत की सरपंच चुनी गई, तो गाँव ने औपचारिक रूप से एक महिला नेता को चुना था। लेकिन व्यवहार में नेतृत्व करना आसान नहीं था। शुरुआत में मुझे एक ऐसी चुनौती का सामना करना पड़ा जिसका सामना स्थानीय शासन में कई महिला प्रतिनिधियों को करना पड़ता है, उन्हें स्वतंत्र निर्णयकर्ता के बजाय केवल एक औपचारिक या प्रतीकात्मक नेता के रूप में देखा जाना।

हालाँकि मैं निर्वाचित सरपंच थी, फिर भी कई महत्वपूर्ण फैसलों पर दूसरों का प्रभाव रहता था, जिससे मेरे लिए अपने अधिकारों का पूरी तरह उपयोग करना कठिन हो जाता था। उसी समय पंचायत बैठकों और ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी भी बहुत कम थी। महिला सभाएँसक्रिय नहीं थीं और कई महिलाएँ सार्वजनिक बैठकों में बोलने से हिचकिचाती थीं।

इन परिस्थितियों ने यह स्पष्ट किया कि जमीनी स्तर के शासन में औपचारिक प्रतिनिधित्व और वास्तविक भागीदारी के बीच अभी भी एक बड़ा अंतर है।

चुनौती

पंचायती राज व्यवस्था का उद्देश्य निर्वाचित प्रतिनिधियों को अपने समुदाय का नेतृत्व करने का अधिकार देना है। लेकिन कई स्थानों पर पारंपरिक सामाजिक धारणाएँ अब भी यह तय करती हैं कि शक्ति का उपयोग कैसे होगा।

गड़ली में भी ऐसा ही था। सरपंच चुने जाने के बावजूद मुझे शुरुआत में उस स्थिति का सामना करना पड़ा जिसे अक्सर "प्रॉक्सी नेतृत्व" कहा जाता है, जहाँ महिला प्रतिनिधियों से अपेक्षा की जाती है कि वे दूसरों द्वारा लिए गए निर्णयों का पालन करें।

इसके साथ ही गाँव के शासन में महिलाओं की भागीदारी भी सीमित थी। महिला सभाएँ बहुत कम आयोजित होती थीं और कई महिलाएँ सार्वजनिक मंचों पर बोलने में असहज महसूस करती थीं। मुझे महसूस हुआ कि यदि यह स्थिति जारी रही, तो जमीनी लोकतंत्र का उद्देश्य अधूरा रह जाएगा।

परिवर्तन की शुरुआत

क्षमता-विकास कार्यक्रमों में भाग लेने और पंचायती राज की प्रक्रियाओं को समझने के माध्यम से मुझे अपने पद से जुड़े अधिकारों और जिम्मेदारियों की बेहतर समझ मिली।

मैंने पंचायती राज अधिनियमके प्रावधानों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया और यह जाना कि निर्वाचित प्रतिनिधियों को कौन-कौन से संस्थागत अधिकार प्राप्त होते हैं। इस ज्ञान ने मुझे नेतृत्व के बारे में स्पष्टता दी।

मुझे समझ में आया कि नेतृत्व झिझक के साथ नहीं निभाया जा सकता। इसके लिए जागरूकता के साथ-साथ आत्मविश्वास और दृढ़ता भी आवश्यक है।

पहल और कार्यवाही

धीरे-धीरे मैंने सरपंच के रूप में अपनी भूमिका को सक्रिय रूप से निभाना शुरू किया। मैंने ग्राम पंचायत की बैठकों की नियमित रूप से अध्यक्षता करनी शुरू की और यह सुनिश्चित किया कि निर्णय सामूहिक चर्चा के माध्यम से लिए जाएँ।

विकास कार्यों के लिए संसाधन और सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से मैंने सरकारी कार्यालयों से भी अधिक संवाद शुरू किया।

महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिएमहिला चौपालऔर सामुदायिक बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों ने महिलाओं को अपनी समस्याएँ और आकांक्षाएँ खुलकर रखने का अवसर दिया।

धीरे-धीरे ये मंच ऐसे स्थान बन गए जहाँ महिलाएँ मुद्दों पर चर्चा कर सकें, अपने विचार साझा कर सकें और गाँव के विकास में योगदान दे सकें। इसके साथ ही व्यावसायिक प्रशिक्षण से जुड़ी पहलें भी शुरू की गईं, जिससे कई महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के अवसर मिले।

दिखाई देने वाला बदलाव

समय के साथ गड़ली में शासन का माहौल बदलने लगा। ग्राम सभा की बैठकों में लोगों की भागीदारी बढ़ी और महिलाएँ सामुदायिक चर्चाओं में अधिक सक्रिय रूप से शामिल होने लगीं। जो महिलाएँ पहले चुप रहती थीं, वे अब आत्मविश्वास के साथ अपनी राय व्यक्त करने लगीं।

पंचायत भी धीरे-धीरे एक अधिक सहभागी संस्था के रूप में विकसित हुई, जहाँ चर्चाएँ विवादों के बजाय विकास और समुदाय के कल्याण पर केंद्रित होने लगीं।

मेरा मानना है कि जब निर्वाचित प्रतिनिधि अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों को सही ढंग से समझते हैं, तो वे जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत बना सकते हैं।

नेतृत्व पर विचार

मेरी यह यात्रा दिखाती है कि जागरूकता, आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के माध्यम से औपचारिक प्रतिनिधित्व को प्रभावी नेतृत्व में बदला जा सकता है।

अपने कानूनी अधिकारों को समझकर और समुदाय के साथ सक्रिय रूप से जुड़कर मैं पंचायत की निर्वाचित प्रमुख के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत कर पाई और शासन में महिलाओं की भागीदारी के लिए नए अवसर बना सकी।

मेरा अनुभव यह भी दर्शाता है कि जब महिला नेताओं को सही जानकारी, सहयोग और अवसर मिलते हैं, तो वे जमीनी लोकतंत्र को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

नेतृत्व से सीख

महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व समावेशी शासन के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।

जब इस प्रतिनिधित्व को कानूनी जागरूकता, आत्मविश्वास और समुदाय की सक्रिय भागीदारी का समर्थन मिलता है, तो यह जमीनी स्तर पर सार्थक और परिवर्तनकारी नेतृत्व का रूप ले सकता है।

जब आत्मविश्वास ने संदेह की जगह ली

नूर नेहर बेगम की नेतृत्व यात्रा

नाम: श्रीमती नूर नेहर बेगम
पद: पंचायत अध्यक्ष
ग्राम पंचायत: 7 नंबर निचुका
ब्लॉक: चकचका
जिला: बरपेटा, असम

जिम्मेदारी को समझने की शुरुआत

मैं 7 नंबर निचुका ग्राम पंचायत की पंचायत अध्यक्ष चुनी गई। यह जिम्मेदारी मेरे लिए गर्व के साथ-साथ कुछ अनिश्चितता भी लेकर आई। सार्वजनिक नेतृत्व की भूमिका में यह मेरा पहला अनुभव था, इसलिए शुरुआत में इस पद से जुड़ी जिम्मेदारियों को निभाने को लेकर मुझे चिंता भी होती थी।

सबसे बड़ी चुनौती पंचायत के कर्मचारियों और अन्य अधिकारियों का विश्वास हासिल करना था। मुझे यह साबित करने की जरूरत महसूस होती थी कि मैं प्रशासनिक प्रक्रियाओं को समझ सकती हूँ और एक निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभा सकती हूँ। एक महिला नेता होने के नाते मैं यह भी सुनिश्चित करना चाहती थी कि मेरी भूमिका को केवल आरक्षण के कारण मिली एक औपचारिक या प्रतीकात्मक जिम्मेदारी के रूप में न देखा जाए।

परिवर्तन की शुरुआत

मेरी नेतृत्व यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब मैंने महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजिततीन दिवसीय "बदलाव का नेतृत्व" विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रममें भाग लिया।

इस प्रशिक्षण के दौरान मुझे पंचायती राज व्यवस्था के कई महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में जानकारी मिली। सत्रों के माध्यम से मैंने पंचायत प्रशासन के तीन प्रमुख स्तंभकोष, कार्य और कार्यकर्त्ता (3Fs)को समझा। इसके साथ ही मुझे ग्राम सभा की प्रक्रिया, ग्राम पंचायत विकास योजना (GPDP)और निर्वाचित प्रतिनिधियों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में भी स्पष्ट जानकारी मिली।

प्रशिक्षण में भाग लेने से पहले मुझे इन विषयों की पूरी समझ नहीं थी। इस कार्यक्रम ने मुझे यह एहसास कराया कि यदि हमारे पास सही जानकारी और आत्मविश्वास हो, तो निर्वाचित प्रतिनिधि की जिम्मेदारियाँ उतनी कठिन नहीं होतीं जितनी पहली नजर में लगती हैं।

आत्मविश्वास के साथ नेतृत्व

प्रशिक्षण के बाद मैंने पंचायत शासन और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया। इस कार्यक्रम से मुझे यह भी समझ में आया कि समुदाय की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न विभागों के साथ समन्वय (कन्वर्जेन्स) कितना महत्वपूर्ण है।

इस सीख को लागू करते हुए मैंने स्वास्थ्य विभाग के साथ समन्वय किया औरविश्व कुष्ठ दिवसके अवसर पर अपनी पंचायत में एक स्वास्थ्य शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस पहल से समुदाय में जागरूकता बढ़ी और लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच मिली।

इस अनुभव ने मेरे आत्मविश्वास को और मजबूत किया और मुझे यह विश्वास दिलाया कि मैं प्रभावी ढंग से नेतृत्व कर सकती हूँ। प्रशिक्षण के बाद शासन को देखने का मेरा दृष्टिकोण भी बदल गया।

एक नया दृष्टिकोण

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने एक महिला नेता के रूप में खुद को देखने का मेरा नजरिया भी बदल दिया। मुझे महसूस हुआ कि पहले मैं अपनी क्षमताओं को लेकर कुछ संदेह रखती थी। इस कार्यक्रम ने मुझे उन धारणाओं से बाहर निकलने में मदद की और यह समझाया कि नेतृत्व किसी एक महिला या पुरुष (लिंग) तक सीमित नहीं होता।

आज मेरा मानना है कि महिला प्रतिनिधियों को अपनी क्षमताओं पर भरोसा करना चाहिए और नेतृत्व में आगे आना चाहिए। हमें केवल इसलिए नेतृत्व नहीं करना चाहिए कि सीटें हमारे लिए आरक्षित हैं, बल्कि इसलिए कि हम अपने समुदाय का मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं।

व्यक्तिगत अनुभव

पीछे मुड़कर देखने पर मुझे लगता है कि "बदलाव का नेतृत्व" प्रशिक्षण कार्यक्रममेरी नेतृत्व यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। इसने मुझे वह ज्ञान, स्पष्टता और आत्मविश्वास दिया जिसकी मदद से मैं पंचायत अध्यक्ष के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से निभा सकी-चाहे वह योजनाओं का क्रियान्वयन हो, विभागों के साथ समन्वय हो या समुदाय के कल्याण के लिए संसाधन जुटाना।

नेतृत्व की शुरुआत स्वयं पर विश्वास से होती है। जब यह आत्मविश्वास बन जाता है, तब समुदाय की सेवा करना एक सार्थक और संभव जिम्मेदारी बन जाता है।

नेतृत्व से सीख

प्रशिक्षण और ज्ञान महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों को झिझक से आगे बढ़ने और आत्मविश्वास के साथ पंचायत शासन का नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाते हैं।

गाँव को समझाने की पहल

ज्योति श्रीवास्तव की नेतृत्व यात्रा

नाम: श्रीमती ज्योति श्रीवास्तव
पद: निर्वाचित प्रतिनिधि
ग्राम पंचायत: सेनवरिया
ब्लॉक: मझौलिया   जिला: पश्चिम चंपारण   राज्य: बिहार

वह बातचीत जिसने बैठक का माहौल बदल दिया

कई मिनटों से चर्चा चल रही थी। गाँव के लोग समुदाय के विकास से जुड़े मुद्दों पर बातचीत करने के लिए एकत्र हुए थे। अलग-अलग लोग अपनी राय रख रहे थे। ज्योति श्रीवास्तव ध्यान से सबकी बातें सुन रही थीं और सही समय का इंतजार कर रही थीं।

जब उन्होंने बोलना शुरू किया, तो बैठक का माहौल थोड़ा शांत हो गया। उन्होंने कहा,

"क्यों न हम पहले सबकी समस्याएँ और सुझाव ध्यान से सुन लें? उसके बाद ही हम तय कर पाएँगे कि गाँव को वास्तव में किस चीज़ की जरूरत है।"

यह सुझाव बहुत सरल था, लेकिन इससे चर्चा की दिशा बदल गई। उस दिन बैठक केवल अलग-अलग राय रखने तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामूहिक समझ बनाने की ओर बढ़ गई।

सार्वजनिक नेतृत्व की शुरुआत

जब ज्योति श्रीवास्तव ने एक निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में सार्वजनिक जीवन में कदम रखा, तो उन्हें जल्दी ही यह समझ आ गया कि गाँव में नेतृत्व का एक बड़ा हिस्सा संवाद पर आधारित होता है।

विकास से जुड़े मुद्दों में कई लोगों की अलग-अलग राय होती है-किसान, परिवार, स्थानीय कामगार और समुदाय के अन्य सदस्य। इन सभी आवाज़ों को साथ लाने के लिए धैर्य और ध्यान से सुनने की क्षमता आवश्यक होती है।

शुरुआत में इन चर्चाओं को संभालना हमेशा आसान नहीं था। कई बार अलग-अलग अपेक्षाओं और प्राथमिकताओं के कारण बातचीत जटिल हो जाती थी। ज्योति ने समझ लिया कि प्रभावी नेतृत्व के लिए विश्वास बनाना और खुली बातचीत को बढ़ावा देना बहुत जरूरी है।

प्रशिक्षण से मिली सीख

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित "बदलाव का नेतृत्व" प्रशिक्षण कार्यक्रममें भाग लेने से उनकी यह समझ और मजबूत हुई।

इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों कोसहभागी शासन के सिद्धांतों से परिचित कराया गया और यह बताया गया कि पंचायत प्रतिनिधि विकास से जुड़ी चर्चाओं में समुदाय को कैसे सक्रिय रूप से शामिल कर सकते हैं।

समूह गतिविधियों, भूमिका-अभिनय (रोल प्ले) और चर्चाओं के माध्यम से इस कार्यक्रम ने गाँव के शासन में संवाद और सहयोग के महत्व को रेखांकित किया।

ज्योति के लिए इन सीखों ने एक महत्वपूर्ण बात को और स्पष्ट किया, नेतृत्व केवल निर्णय लेने का नाम नहीं है, बल्कि समुदाय को मिलकर निर्णय लेने की दिशा में आगे बढ़ाने की प्रक्रिया भी है।

लोगों को साथ लाना

प्रशिक्षण से लौटने के बाद ज्योति ने पंचायत की बैठकों में अधिक खुली चर्चा को प्रोत्साहित करना शुरू किया।

उन्होंने अलग-अलग समूहों की समस्याओं को ध्यान से सुनने पर जोर दिया और यह सुनिश्चित किया कि बातचीत सकारात्मक और समाधान-केंद्रित बनी रहे। चर्चाओं का मार्गदर्शन करते हुए और लोगों को भाग लेने के लिए प्रेरित करते हुए उन्होंने ऐसा माहौल बनाया जहाँ गाँव के लोग खुलकर अपनी राय रख सकें।

उन्होंने विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में भी जागरूकता फैलानी शुरू की और महिलाओं को ग्राम सभा की बैठकों तथा पंचायत की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

धीरे-धीरे बैठकों का स्वरूप अधिक सहयोगपूर्ण बनने लगा।लोग अब चर्चाओं को मतभेद के रूप में नहीं, बल्कि मिलकर समाधान खोजने के अवसर के रूप में देखने लगे।

एक ऐसा गाँव जो सुनना सीख रहा है

समय के साथ सामुदायिक चर्चाओं का माहौल बदलने लगा। लोग अपनी समस्याओं के बारे में खुलकर बात करने लगे और विकास की प्राथमिकताओं को मिलकर तय करने लगे। पंचायत की बैठकों में विचार साझा किए जाने लगे और संवाद के माध्यम से निर्णय लिए जाने लगे।

ज्योति श्रीवास्तव के लिए यह बदलाव जमीनी स्तर के शासन में संवाद के महत्व को दर्शाता है। कई बार नेतृत्व की शुरुआत एक छोटे से कदम से होती है, लोगों को एक-दूसरे की बात सुनने के लिए प्रेरित करना।

व्यक्तिगत अनुभव

एक निर्वाचित प्रतिनिधि की यात्रा अक्सर समुदाय के साथ जुड़ने की क्षमता से तय होती है।

धैर्य, संवाद और समावेशी भागीदारी के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से गाँव की चर्चाएँ सामूहिक निर्णय लेने का एक मजबूत मंच बन सकती हैं।

ज्योति के लिए नेतृत्व का अर्थ था-बातचीत को ऐसे समाधान की ओर ले जाना जो पूरे समुदाय के हित में हो।

नेतृत्व से सीख

प्रभावी जमीनी नेतृत्व संवाद पर आधारित होता है।

जब नेता समुदाय को एक-दूसरे की बात सुनने के लिए प्रेरित करते हैं, तब सामूहिक समाधान सामने आने लगते हैं।

अनुभाग
III

शासन की संस्थाओं को सशक्त बनाना

पंचायती राज संस्थाओं में प्रभावी नेतृत्व केवल व्यक्तिगत पहल तक सीमित नहीं होता। इसका अर्थ उन व्यवस्थाओं और प्रणालियों को भी मजबूत करना है जिनके माध्यम से स्थानीय शासन संचालित होता है।

पंचायतें विकास कार्यों की योजना बनाने, विभिन्न सरकारी विभागों के साथ समन्वय स्थापित करने और यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं कि सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग समुदाय की प्राथमिकताओं के अनुसार हो। इन जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभाने के लिए निर्वाचित प्रतिनिधियों को प्रशासनिक प्रक्रियाओं, वित्तीय व्यवस्थाओं और सहभागी योजना निर्माण की प्रणाली को समझना आवश्यक होता है।

क्षमता-विकास कार्यक्रम इस अंतर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसे कार्यक्रम प्रतिनिधियों को वह ज्ञान और कौशल प्रदान करते हैं, जिनकी मदद से वे शासन की प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझ और संचालित कर सकें। जैसे-जैसे प्रतिनिधि इन प्रक्रियाओं से परिचित होते हैं, पंचायतें अधिक आत्मविश्वास और पारदर्शिता के साथ काम करने लगती हैं।

इस अनुभाग में प्रस्तुत कहानियाँ व्यक्तिगत नेतृत्व से आगे बढ़कर संस्थागत सु-ढ़ीकरण की इस प्रक्रिया को दर्शाती हैं। ये उदाहरण दिखाते हैं कि महिला प्रतिनिधियों ने किस तरह ग्राम सभा की बैठकों को अधिक प्रभावी बनाया, योजना निर्माण की प्रक्रियाओं को मजबूत किया और विकास से जुड़े निर्णयों में सामूहिक भागीदारी को प्रोत्साहित किया।

ये यात्राएँ यह स्पष्ट करती हैं कि मजबूत संस्थाएँ जागरूक नेतृत्व और समुदाय की सक्रिय भागीदारी से ही बनती हैं।

शासन सीखना

निहारिका सुकृति की नेतृत्व यात्रा

नाम: श्रीमती निहारिका सुकृति
पद: मुखिया
ग्राम पंचायत: बुंदू
जिला: बोकारो
राज्य: झारखंड

पहली ब्लॉक बैठक

कमरा अधिकारियों और विभिन्न पंचायतों के निर्वाचित प्रतिनिधियों से भरा हुआ था। यह निहारिका सुकृति के लिए बुंदू ग्राम पंचायत की मुखिया बनने के बाद पहली ब्लॉक स्तर की बैठकों में से एक थी। बैठक में विकास संबंधी मुद्दों, योजनाओं, बजट, विभागीय जिम्मेदारियों और संस्थाओं के बीच समन्वय पर चर्चा हो रही थी।

पहली बार पंचायत प्रशासन में प्रवेश करने वाले किसी व्यक्ति के लिए यह चर्चा भारी लग रही थी। निहारिका ध्यान से सुन रही थीं और समझने की कोशिश कर रही थीं कि ये सब कैसे जुड़ता है। यह स्पष्ट था कि पंचायत नेतृत्व केवल उत्साह से नहीं, बल्कि शासन प्रणाली की समझ से भी जुड़ा होता है।

एक नई जिम्मेदारी

मुखिया के रूप में जिम्मेदारी संभालते समय निहारिका सुकृति के पास अपने समुदाय में योगदान देने की मजबूत इच्छा थी।

हालांकि, पंचायत प्रशासन की प्रक्रियाएँ, विकास गतिविधियों की योजना बनाना, विभागों के साथ समन्वय और बैठकों का प्रबंधन करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान की आवश्यकता थी, जो वह अभी सीख रही थीं।

बहुत से नए निर्वाचित प्रतिनिधियों की तरह, वह सीखते हुए नेतृत्व कर रही थीं। उन्हें पता था कि पंचायत को मजबूत बनाने का मतलब यह समझना है कि ये प्रणालियाँ कैसे काम करती हैं।

परिवर्तन की शुरुआत

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित क्षमता विकास कार्यक्रम में भाग लेना इस सीखने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। प्रशिक्षण सत्रों ने पंचायत राज संस्थाओं की संरचना और स्थानीय शासन में निर्वाचित नेताओं की जिम्मेदारियों को स्पष्ट किया। चर्चाओं और गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों ने यह जाना कि पंचायतें कैसे विकास पहलों का समन्वय करती हैं, सरकारी विभागों के साथ कैसे जुड़ती हैं और समुदायों को योजना बनाने में कैसे शामिल करती हैं।

निहारिका के लिए यह प्रशिक्षण शासन की अमूर्त अवधारणाओं को व्यावहारिक जिम्मेदारियों में बदलने में मददगार साबित हुआ। इसने उन्हें अपने कार्य को अधिक आत्मविश्वास के साथ करने की स्पष्टता दी। उन्होंने सीखा कि सार्वजनिक रूप से प्रभावी ढंग से बोलना और पंचायत राज अधिनियम और सरकारी कार्यों की विभिन्न व्यवस्थाओं को समझना कितना महत्वपूर्ण है।

प्रशासनिक आत्मविश्वास का निर्माण

प्रशिक्षण के बाद निहारिका ने प्रशासनिक चर्चाओं और पंचायत बैठकों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया। वह पंचायत सदस्यों और अधिकारियों के साथ आत्मविश्वास से जुड़ती हुई, विकास प्राथमिकताओं पर चर्चा करती और समुदाय की जरूरतों को पूरा करने के उपाय खोजती थीं।

पहले जो ब्लॉक स्तर की बैठकों में डर लगता था, वह धीरे-धीरे सरकारी योजनाओं और विकास पहलों के समन्वय को सीखने का मूल्यवान अवसर बन गया। प्रत्येक बैठक और निर्णय के साथ उनका शासन ज्ञान और भी गहरा होता गया।

पंचायत को मजबूत बनाना

जैसे-जैसे उनका आत्मविश्वास बढ़ा, पंचायत का संचालन भी सुदृढ़ हुआ। बैठकों का ढांचा अधिक संगठित और विकास प्राथमिकताओं पर केंद्रित हुआ। अधिकारियों और समुदाय के सदस्यों के साथ चर्चाएँ अधिक उत्पादक बन गईं, जिससे पंचायत स्थानीय समस्याओं को अधिक प्रभावी ढंग से हल कर सकी।

शुरुआत में जो असमर्थता थी, वह धीरे-धीरे संस्थागत नेतृत्व में बदल गई।

व्यक्तिगत अनुभव

पीछे मुड़कर देखने पर, निहारिका सुकृति अपनी यात्रा को सीखने की निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखती हैं।

पंचायत शासन में नेतृत्व एक रात में नहीं आता। यह अनुभव, प्रशिक्षण और समुदाय व प्रशासनिक संस्थाओं के साथ जुड़ाव के माध्यम से विकसित होता है।

क्षमता विकास के माध्यम से प्राप्त ज्ञान ने असमर्थता को आत्मविश्वास में और भागीदारी को नेतृत्व में बदल दिया।

नेतृत्व का सबक

जब निर्वाचित प्रतिनिधि शासन प्रणालियों को समझते हैं और इस ज्ञान का उपयोग अपने समुदायों में विकास के मार्गदर्शन के लिए करते हैं, तभी मजबूत पंचायतें बनती हैं।

गाँव के सात स्तंभ

सवित्री लोगनाथन की नेतृत्व यात्रा

नाम:श्रीमती सवित्री लोगनाथन
पद: पंचायत अध्यक्ष
ग्राम पंचायत: एरैयुर
जिला: विलुपुरम
राज्य: तमिलनाडु

गाँव को समग्र रूप से समझना

जब सवित्री लोगनाथन एरैयुर की पंचायत अध्यक्ष बनीं, तो उन्होंने सबसे पहले गाँव को ध्यान से देखा और समझा।हर गली, हर सार्वजनिक जगह, हर व्यक्ति से बातचीत उन्हें गाँव की जरूरतें दिखाती थी।

सिर्फ एक मुद्दे पर ध्यान देने से काम नहीं चलता। पानी, स्वच्छता, आजीविका, शिक्षा, और समुदाय की भागीदारी-ये सब एक-दूसरे से जुड़े थे।

सवित्री के लिए शासन का मतलब था यह देखना कि ये सब चीज़ें कैसे एक साथ गाँव की भलाई के लिए काम करती हैं।

शुरुआती चुनौतियाँ

पहली बार पंचायत के काम में आने पर, सवित्री को प्रशासन और योजना बनाने की जिम्मेदारियों को समझने में मुश्किल हुई।

विकास के कामों को लागू करने के लिए विभागों के साथ समन्वय, समुदाय के लोगों से बातचीत और संसाधनों का सही इस्तेमाल करना जरूरी था।

अगर ये चीज़ें ठीक से समझी न जाएँ, तो काम व्यवस्थित ढंग से नहीं हो पाता।

सवित्री जानती थीं कि पंचायत को मजबूत बनाने के लिएसपष्ट सोच और व्यावहारिक ज्ञानदोनों चाहिए।

परिवर्तन की शुरुआत

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने से सवित्री की समझ और बढ़ी।इन प्रशिक्षणों में उन्हें सिखाया गया कि विकास के काम सिर्फ अलग-अलग कार्य नहीं, बल्कि एक योजना के रूप में पूरे गाँव को बेहतर बनाने के लिए किए जाते हैं।

प्रशिक्षण ने बताया कि कैसे पंचायत में लोगों की भागीदारी बढ़ाई जा सकती है, विभागों से सहयोग कैसे लिया जा सकता है, और गाँव की योजना कैसे बनाई जाए।

सवित्री ने समझा किसभी पहलुओं को जोड़कर काम करना ही सही शासन है।

विकास की नींव रखना

अब सवित्री ने गाँव की ज़रूरतों के हिसाब से काम करना शुरू किया।

वह लोगों से बातचीत करतीं, उनकी प्राथमिकताएँ समझतीं और विकास पर चर्चा में सभी की भागीदारी बढ़ातीं।

विभिन्न विभागों के साथ तालमेल से संसाधनों का बेहतर उपयोग हुआ।धीरे-धीरे पंचायत के कामों में सुधार आया- बुनियादी सुविधाओं से लेकर सामुदायिक कल्याण तक।

यह तरीका गाँव में विकास कीसंपूर्ण योजनाबनाने में मददगार साबित हुआ।

समुदाय की भागीदारी बढ़ाना

सवित्री ने यह भी सुनिश्चित किया कि गाँव के लोग चर्चा में शामिल हों।

वह लोगों को प्रोत्साहित करतीं कि वे अपने विचार साझा करें और यह बताएं कि उनके लिए क्या जरूरी है।

इससे गाँव में सबकी समझ बनी और विकास के काम में लोगों ने सहयोग देना शुरू किया।

सामूहिक प्रयास से पंचायत और गाँव के बीच बेहतर तालमेल बना।

व्यक्तिगत अनुभव

सवित्री के लिए नेतृत्व का मतलब है गाँव की लंबी अवधि की भलाई के लिए मजबूत नींव तैयार करना।

हर छोटा या बड़ा काम-चाहे वह शिक्षा, पानी, स्वास्थ्य या योजना से जुड़ा हो-गाँव के विकास में योगदान देता है।

जब नेतृत्व स्पष्ट दृष्टि और लोगों की भागीदारी से जुड़ा हो, तो पंचायतसच्चे मायने में विकास का मंच बन जाती है।

नेतृत्व का सबक

सफल पंचायत शासन के लिए दो चीज़ें जरूरी हैं-सपष्ट दृष्टि और लोगों का सहयोग।

जब पंचायत प्रतिनिधि गाँव के विकास को समग्र रूप से देखते हैं और समुदाय को साथ लेकर चलते हैं, तो पूरा गाँव साथ में आगे बढ़ता है।

शून्य राजस्व से सक्रिय पंचायत तक

नेतृत्व यात्रा: श्रीमती जीविता रमेश

पद: पंचायत अध्यक्ष
ग्राम पंचायत: सेंबरायनल्लोर
जिला: वेल्लोर, तमिलनाडु

पंचायत के खातों पर नजर

पंचायत अध्यक्ष बनते ही जीविता रमेश ने सबसे पहले पंचायत के वित्तीय हालात की समीक्षा की।

गाँव का विकास संसाधनों पर निर्भर करता है-सड़कें, साफ़-सफाई, पीने का पानी, और अन्य सार्वजनिक सुविधाएँ। जब उन्होंने पंचायत के रिकॉर्ड देखे, तो उन्हें एहसास हुआ कि विकास योजनाओं को बेहतर बनाने के लिए राजस्व सृजन मजबूत करनाजरूरी है।

यह उनके लिए विकास की शुरुआत का महत्वपूर्ण बिंदु बन गया।

शासन और प्रशासन की चुनौती समझना

पंचायत स्थानीय संसाधनों के प्रबंधन और विकास योजनाओं के लिए केंद्रीय भूमिका निभाती है।

सिर्फ प्रशासनिक तालमेल ही नहीं, बल्कि वित्तीय अनुशासन और संस्थागत योजना भी जरूरी है।

नई निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए यह जिम्मेदारियाँ संभालना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। पंचायत के वित्त को प्रबंधित करना, विभागों के साथ समन्वय करना, और समुदाय को शामिल करना-इसके लिए ज्ञान और अनुभव दोनों चाहिए।

जीविता ने समझा कि पंचायत को मजबूत बनाने का मतलब है - मजबूत संस्थागत आधार तैयार करना।

परिवर्तन की शुरुआत

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम ने उनकी समझ को और गहरा किया।प्रशिक्षण में पंचायत की संस्थागत जिम्मेदारियों जैसे योजना बनाना, संसाधनों का प्रबंधन और विभागों के साथ तालमेल पर जोर दिया गया।

साथ ही, शासन की प्रथाओं और समुदाय की भागीदारी पर चर्चा ने यह दिखाया कि पंचायतें कैसे अधिक प्रभावी रूप से काम कर सकती हैं।

जीविता के लिए, इस प्रशिक्षण ने यह साबित कर दिया किप्रशासनिक समझ और समुदाय सहभागिता दोनों जरूरी हैं।

पंचायत को मजबूत बनाना

प्रशिक्षण के बाद, जीविता ने पंचायत की कार्यप्रणाली मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया।

उन्होंने प्रशासनिक समन्वय सुधारा और गांव वालों और पंचायत सदस्यों को विकास प्राथमिकताओं पर चर्चा में शामिल किया।

इससे पंचायत में सहयोगात्मक माहौल बना और वित्तीय प्रबंधन तथा संस्थागत कार्यप्रणाली में सुधार हुआ।

दिखने वाला बदलाव

जैसे-जैसे शासन प्रक्रियाएँ व्यवस्थित हुई, पंचायत गांव की विकास जरूरतों को बेहतर तरीके से पूरा करने लगी।

बेहतर तालमेल और योजना से विकास कार्य तेजी से आगे बढ़ने लगे।

गांव के लोग भी पंचायत में भागीदारी करने लगे और पंचायतसहभागी शासन का मंचबन गई।

धीरे-धीरे पंचायत एक सक्रिय और उत्तरदायी संस्थाबन गई, जो समुदाय की जरूरतों को पूरा करने लगी।

व्यतिगत अनुभव

जीविता के अनुसार, यह यात्रा यह दिखाती है कि स्थानीय शासन मेंसंस्थागत नेतृत्वकितना महत्वपूर्ण है।

मजबूत पंचायत केवल व्यक्तिगत प्रयास से नहीं बनती, बल्कि योजना, वित्तीय प्रबंधन और समुदाय सहभागिता का मजबूत आधार बनाने से बनती है।

नेतृत्व का सबक

जब पंचायत नेता संस्थागत प्रणाली, योजना और वित्तीय प्रबंधन को मजबूत करते हैं, तो स्थानीय शासन अधिक प्रभावी और टिकाऊ बनता है।

वह गाँव जिसने साथ में योजना बनाई

नेतृत्व यात्रा: श्रीमती इंदुजा

पद: पंचायत अध्यक्ष
ग्राम पंचायत: वरगनूर
जिला: तेनकासी, तमिलनाडु

एक अलग तरह की बैठक

जब इंदुजा ने वरगनूर पंचायत में ग्राम सभा की बैठकें संचालित करना शुरू किया, तो उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात ध्यान दिया की।

गाँववाले नियमित रूप से बैठकों में आते थे, लेकिन चर्चा अक्सर जल्दी-जल्दी एक मुद्दे से दूसरे मुद्दे पर चली जाती थी। विकास के फैसले कभी-कभी गांव के लोगों की रोजमर्रा की ज़रूरतों से जुड़े नहीं लगते थे।

इंदुजा ने महसूस किया कि पंचायत के भविष्य की योजनापूरे समुदाय की आवाज़ों को शामिल करके बनाई जानी चाहिए।

उनके लिए शासन का मतलब सुनना और समझना था।

चुनौती को समझना

पंचायतें यह तय करने की जिम्मेदारी निभाती हैं कि गांव के विकास की प्राथमिकताएँ क्या हैं और इसे पूरा करने के लिए प्रयासों का समन्वय कैसे होगा।

लेकिन प्रभावी योजना तभी बन सकती है जब गाँव वाले सक्रिय रूप से शामिल हों। बिना समुदाय की भागीदारी के, विकास कार्य महत्वपूर्ण स्थानीय जरूरतों को पूरा नहीं कर पाते।

इंदुजा ने अपने कार्यकाल की शुरुआत में यह महसूस किया किसहभागी योजनाको मजबूत करना जरूरी है ताकि गाँव का विकास सही दिशा में आगे बढ़ सके।

परिवर्तन की शुरुआत

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम ने इस समझ को विकसित करने में मदद की।

प्रशिक्षण में यह बताया गया कि पंचायतें समुदाय को योजना बनाने की प्रक्रिया में कैसे शामिल कर सकती हैं और ग्राम सभा कैसे सहभागी शासन का आधार बनती है।

चर्चा और व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि गाँव का विकास तब अधिक प्रभावी होता है जब लोग सक्रिय रूप से अपने मुद्दे और समाधान साझा करें।

इन बातों ने इंदुजा को यह सोचने के लिए प्रेरित किया कियोजना बनाना अब एक सहयोगात्मक प्रक्रिया होनी चाहिए।

सामुदायिक सहभागिता के साथ योजना बनाना

प्रशिक्षण के बाद, इंदुजा ने ग्राम सभा में भागीदारी बढ़ाने की पहल की।

गाँववालों को अपने रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी समस्याओं-पानी, साफ़-सफाई, आजीविका और अन्य विकास मुद्दों-पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया गया।

इन चर्चाओं से योजना बनाने में विभिन्न दृष्टिकोण शामिल होने लगे। धीरे-धीरे, समुदाय के लोग यह सुझाव देने लगे कि पंचायत स्थानीय समस्याओं का समाधान कैसे कर सकती है। योजना अब केवल प्रशासनिक काम नहीं, बल्किसाझा प्रयासबन गई।

साझा जिम्मेदारी का निर्माण

जैसे-जैसे सहभागिता बढ़ी, गाँववालों में विकास पहलों के प्रतिअधिक जिम्मेदारी और स्वामित्व विकसित हुआ।

समुदाय सक्रिय रूप से प्राथमिकताओं और समाधानों पर चर्चा करने लगा। इस सहयोगात्मक दृष्टिकोण ने पंचायत और ग्रामीणों के बीच विश्वासभी मजबूत किया।

ग्राम सभा अब वह जगह बन गई जहाँ निर्णय पूरी समुदाय की आवाज़ और अनुभवों को दर्शाते थे।

व्यक्तिगत अनुभव

इंदुजा के लिए यह अनुभव एक सरल सच्चाई को पुष्ट करता है-

विकास तब अधिक सार्थक होता है जब यह समुदाय की भागीदारी और विचारों से निकलता है।

जब लोग अपने गाँव की योजना बनाने के लिए साथ आते हैं, तो पंचायत केवल प्रशासनिक संस्था नहीं, बल्किसाझा प्रगति का मंचबन जाती है।

नेतृत्व का सबक

सहभागी योजना से जमीनी लोकतंत्र मजबूत होता है। जब समुदाय विकास की प्राथमिकताओं को तय करने में सक्रिय रूप से शामिल होता है, तो पंचायत अधिक उत्तरदायी और प्रभावी बनती है।

अनुभव से सशक्त नेतृत्व तक

नेतृत्व यात्रा: श्रीमती पूर्णिमा नस्कर

पद: प्रधान
ग्राम पंचायत: सांकरपुर–I
ब्लॉक: बरुइपुर
जिला: साउथ 24 परगना
राज्य: पश्चिम बंगाल

एक पंचायत जो बड़ी ग्रामीण समुदाय की सेवा करती है

श्रीमती पूर्णिमा नस्कर 2018 से प्रधान के रूप में कार्यरत हैं। इससे पहले, वह 2013 से 2018 तक उप-प्रधान के रूप में काम कर चुकी थीं। पंचायत शासन का उनका अनुभव उन्हें गाँव की समस्याओं को समझने में मदद करता था, लेकिन प्रधान बनना नई चुनौतियों के साथ आया।

चुनौतियों को समझना

अनुभव के बावजूद, प्रारंभ में पूर्णिमा नस्कर को पुरुष प्रधान निर्णय-प्रक्रिया वाले माहौल में अपने नेतृत्व को आत्मविश्वास से साबित करना मुश्किल था।

गाँववालों से नियमित संपर्क के बावजूद, समुदाय की चिंताओं को ठोस विकास कार्यों में बदलना चुनौतीपूर्ण था।

नेतृत्व प्रशिक्षण और संवाद कौशल का सीमित अनुभव उनके लिए समुदाय की भागीदारी जुटाने और अधिकारियों तथा अन्य हितधारकों के साथ समन्वय बनाने में बाधा बनता था।

परिवर्तन की शुरुआत

उनकी नेतृत्व यात्रा में बड़ा बदलाव तब आया जब उन्होंने अगस्त 2025 में जिला पंचायत प्रशिक्षण और संसाधन केंद्र (DPTRC), बरुइपुर में महिला निर्वाचित प्रतिनिधियोंके लिए आयोजित विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रशिक्षण सत्रों में सहभागी सीखना, सहकर्मी चर्चा और इंटरेक्टिव अभ्यास शामिल थे। इनसे उन्हें विकेंद्रीकृत शासन, नेतृत्व की जिम्मेदारियों और संचार कौशल को समझने में मदद मिली। यह कार्यक्रम उन्हेंसमुदाय के नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी क्षमता को पहचानने और स्थानीय चुनौतियों को हल करने का आत्मविश्वासभी प्रदान करता है।

कार्रवाई और पहल

प्रशिक्षण के बाद, पूर्णिमा नस्कर ने अधिक सक्रिय और समावेशी नेतृत्व अपनाया।

समुदाय के सदस्य, विशेषकर महिलाएं और हाशिए पर रहने वाले समूह, पंचायत के पास अपनी समस्याओं के साथ अधिक आत्मविश्वास के साथ आने लगे।

उनके नेतृत्व में पंचायत ने2026–27 के वार्षिक योजना और बजट में "महिला-हितेषी गाँव" बनाने का लक्ष्य रखा। महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए पहलें शुरू की गईं, जिनमें शामिल हैं SHG-आधारित रोज़गार को मज़बूत करना, हेल्थ सब-सेंटर में गर्भवती और दूध पिलाने वाली माताओं के लिए सुविधाओं में सुधार करना, मदर-चाइल्ड कॉर्नर बनाना, और माँ की सेहत, किशोरों की सेहत और कम उम्र में शादी पर जागरूकता प्रोग्राम आयोजित करना शामिल है। स्कूलों और हेल्थ सेंटर में सैनिटरी नैपकिन वेंडिंग मशीनें भी लगाई गईं।

स्व-उत्पन्न आय (OSR) को मजबूत करने के लिए, पंचायत ने सामुदायिक हॉल का निर्माण किया और तालाबों एवं अन्य स्थानीय संपत्तियों का पट्टा देने को बढ़ावा दिया।

कृषि विभाग के सहयोग से किसानों के लिए सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई और आधुनिक कृषि प्रथाओं को भी अपनाया गया।

क्षेत्र में आर्सेनिक-प्रभावित पेयजलकी समस्या को देखते हुए, पूर्णिमा नस्कर ने एमपीएलएडी योजना के तहतवाटर ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापना के लिए सक्रिय रूप से अधिकारियों और राजनीतिक प्रतिनिधियों के साथ संवाद किया, ताकि सुरक्षित पेयजल की तत्काल आवश्यकता को उजागर किया जा सके।

व्यतिगत अनुभव

आत्मविश्वास, नेतृत्व कौशल और मजबूत समुदाय सहभागिता के माध्यम से, श्रीमती नस्कर ने अपनी भूमिका को एकसक्रिय और उत्तरदायी स्थानीय प्रतिनिधिमें बदल दिया है।

उनकी पहलों ने समुदाय की भागीदारी को मजबूत किया और पंचायत में महिला-केंद्रित विकास को बढ़ावा दिया।

नेतृत्व का सबक

श्रीमती पूर्णिमा नस्कर की यात्रा यह दिखाती है कि क्षमता विकास और नेतृत्व प्रशिक्षण महिलाओं को सामाजिक बाधाओं को पार करने और समावेशी ग्रामीण विकास का नेतृत्व करने के लिए सशक्त बना सकता है।

vi

अनुभाग
IV

विकास
जो जीवन बदल दे

ग्रामीण शासन का अंतिम उद्देश्य लोगों के रोजमर्रा के जीवन को बेहतर बनाना है।

पूरे ग्रामीण भारत में, पंचायतें विभिन्न विकास चुनौतियों का सामना करती हैं-जल संरक्षण से लेकर आधारभूत ढाँचे का निर्माण, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं और आजीविका के अवसर। जब स्थानीय नेता अपनी समुदाय की जरूरतों को समझकर संस्थाओं के साथ मिलकर काम करते हैं, तो छोटी पहलों से भीअर्थपूर्ण बदलावलाया जा सकता है।

इस अनुभाग की कहानियाँ उन महिला प्रतिनिधियों को उजागर करती हैं जिन्होंने अपने नेतृत्व कोठोस सुधारोंमें बदला। उन्होंनेसावधानीपूर्वक योजना, सरकारी विभागों के साथ समन्वय और समुदाय की भागीदारीके माध्यम से उन समस्याओं को हल किया, जो सीधे ग्रामीणों की भलाई को प्रभावित करती थीं।

ये उदाहरण याद दिलाते हैं किग्रामीण स्तर पर विकास अक्सर स्थानीय वास्तविकताओं पर आधारित व्यावहारिक समाधानों से शुरू होता है। जब समुदाय और नेता मिलकर काम करते हैं, तो शासन केवल प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं रह जाता-बल्कि यह एक साझा प्रयास बन जाता है, जोबेहतर भविष्य का निर्माणकरता है।

जमीन वापस पाना, आशा फिर से बनाना

नेतृत्व यात्रा – गीथा उदयकुमार

नामः उ. गीथा उदयकुमार
पदः पंचायत अध्यक्ष
ग्राम पंचायतः करनाई
तलुकः उतिरमेरुर
जिलाः कांचीपुरम, तमिलनाडु

वो समस्या जिसे गांव नजरअंदाज नहीं कर सकता था

जब गीथा उदयकुमार ने करनाई पंचायत के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला, तो उन्हें जल्दी ही पता चला कि गांव का एक बहुमूल्य संसाधन खो गया था। सामुदायिक उपयोग के लिए रखी गई सरकारी जमीन धीरे-धीरे अतिक्रमित हो गई थी।

इस जमीन के बिना, पंचायत के पास आवश्यक सार्वजनिक सुविधाओं के लिए जगह बहुत सीमित थी। स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी सेवाएँ पुराने और जर्जर भवनों में चल रही थीं। गांव को सुनिश्चित और निर्णायक कार्रवाई की जरूरत थी।

परिवर्तन की शुरुआत

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने गीथा को यह समझने में मदद की, कि पंचायत में निर्वाचित सदस्यों के पास प्रशासनिक और कानूनी शक्तियाँ क्या हैं।

पहली बार उन्होंने जमीन प्रबंधन, शासन प्रक्रियाओं और विकास परियोजनाओं को लागू करने से जुड़े नियमों को स्पष्ट रूप से समझा।

सबसे महत्वपूर्ण, इस प्रशिक्षण ने उन्हें प्रशासनिक प्रणालियों के साथ संवाद करने और गांव के लिए समाधान खोजने काआत्मविश्वासदिया।

बदलाव की शुरुवात

प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान का उपयोग करते हुए, गीथा ने अतिक्रमित सरकारी जमीन को वापस पाने के प्रयास शुरू किए। यह प्रक्रिया अधिकारियों के साथ समन्वय और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में धैर्य की मांग करती थी। अंततः, पंचायत ने जमीन पर पुनः नियंत्रण स्थापित कर लिया।

इस सफलता ने विकास की एक नई श्रृंखला की शुरुआत की, नया पंचायत कार्यालय बनाया गया, जिससे स्थानीय शासन के लिए स्थायी प्रशासनिक स्थान मिला।पुराने भवन के स्थान पर नया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र तैयार किया गया और बच्चों के लिए एक सुरक्षित और आधुनिक स्कूल भवन का निर्माण किया गया।

सशक्त और संवेदनशील विकास

गीथा का नेतृत्व समावेशी विकास पर भी केंद्रित था। विशेष ध्यान नारिकुरावर और इरुलरजैसे पिछड़े समुदायों पर दिया गया। सुरक्षित रहने की जगह देने के लिए घरों की पहल की गई, और बच्चों को पढ़ाई जारी रखने के लिए पढ़ाई में मदद दी गई।

ये प्रयास दर्शाते हैं कि पंचायत सुनिश्चित करती है कि विकास के लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुँचें।

देखने योग्य बदलाव

इन सुधारों से गांव में फिर से आत्मविश्वास आया। सार्वजनिक परिसम्पतियाँमजबूत हुई, और पंचायत कार्यालय एक सक्रिय प्रशासनिक केंद्र बन गया।नई सुविधाएं बनने से हेल्थ और एजुकेशन सर्विस में काफी सुधार हुआ।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि समुदाय ने देखा किसशक्त नेतृत्व कैसे विजन को वास्तविक विकास में बदल सकता है।

व्यक्तिगत अनुभव

गीथा उदयकुमार के लिए यह यात्रा यह सिद्ध करती है किस्थानीय शासन में नेतृत्व केवल योजनाओं को लागू करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गांव की जरूरतों की पहचान करने और उपलब्ध शक्तियों का उपयोग कर उन्हें पूरा करने में है।

नेतृत्व से सीख

शासन प्रक्रियाओं का ज्ञान निर्वाचित प्रतिनिधियों को चुनौतियों को विकास के अवसरों में बदलने में सक्षम बनाता है।

घर सँभालने वाली से गाँव की अगुवा तक

नेतृत्व यात्रा – सरपंच रामकली सिंह

नाम: स्मृति रामकली सिंह
पद: सरपंच
ग्राम पंचायत: भुरसी
ब्लॉक: गोहपरु   जिला: शहडोल   राज्य: मध्य प्रदेश

गांव में जीवन

कई वर्षों तक रामकली सिंह अपने घर के कामकाज, पशुपालन और खेतों में कृषि कार्य में व्यस्त रहती थीं। गाँव की अधिकतर महिलाओं की तरह, उनका काम लगातार चलता रहता था लेकिन मुख्य रूप से घर और खेत तक सीमित था।

सार्वजनिक बैठकें, शासन से जुड़े विचार-विमर्श और गांव के निर्णय उस समय उनकी रोजमर्रा की जिंदगी से बहुत दूर लगे। नेतृत्व एक दूर की चीज़ जैसा प्रतीत होता था।

पहला दरवाज़ा खुलता है

2015 में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया जब रामकली ने एकस्वमं सहयता समूहमें शामिल हुई।

ये बैठकें साधारण थीं, जहाँ महिलाएँ बचत, घरेलू मामले और समुदाय के मुद्दों पर चर्चा करती थीं। लेकिन रामकली के लिए ये बैठकें सीखने और आत्मविश्वास बढ़ाने का एक मंच बन गईं।

SHG के माध्यम से उन्होंने अपने नज़दीकी परिचय के बाहर की महिलाओं के साथ संवाद करना शुरू किया। धीरे-धीरे उन्हें एहसास हुआ कि उनके विचार मायने रखते हैं और उनकी आवाज़ समुदाय में महत्वपूर्ण है।

समुदाय में कदम रखना

उनके बढ़ते आत्मविश्वास ने नई जिम्मेदारियाँ भी दीं। रामकली ने कमीुनिटी डेटा कलेक्टर और बाद में समुदाय स्रोत व्यक्ति के रूप में काम किया।

इन भूमिकाओं में उन्हें गांववालों के साथ सीधे संवाद करना और स्थानीय चुनौतियों को समझना पड़ता था।

पहली बार, वह केवल गांव में भाग नहीं ले रही थीं-वह सामुदायिक पहल को संगठित और समर्थित करने में योगदान दे रही थीं।

इस अनुभव ने न केवल गांव वालों के समक्ष छवि बदल दी, बल्कि उनके स्वयं के आत्म-दृष्टिकोण को भी बदल दिया।

चुनाव लड़ने का निर्णय

2022 के पंचायत चुनाव के दौरान, उनकी SHG और अन्य गांववालों ने उन्हें सरपंच के पद के लिए चुनाव लड़नेके लिए प्रोत्साहित किया।

शुरुआत में यह विचार उन्हें आश्चर्यजनक लगा। नेतृत्व कभी दूर की चीज़ लगता था, लेकिन अब समुदाय उन्हें आगे बढ़ने के लिए कह रहा था।

उनके प्रोत्साहन से, रामकली ने चुनाव लड़ने का निर्णय लिया और वेसरपंच के रूप में निर्वाचित हुईं।

नेतृत्व की पहली चुनौतियाँ

चुनाव जीतने पर गर्व हुआ, लेकिन नई जिम्मेदारियाँ भी सामने आईं। सरपंच के रूप में, रामकली को ग्राम सभा की बैठकें संचालित करनी थीं, अधिकारियों के साथ संवाद करना था और पूरे गांव को प्रभावित करने वाले निर्णय लेने थे।

शुरुआत में, ये जिम्मेदारियाँ चुनौतीपूर्ण लगीं। बड़ी सभाओं में बोलना और प्रशासनिक निर्णय लेना आत्मविश्वास की मांग करता था, जो वे धीरे-धीरे विकसित कर रही थीं।

परिवर्तन की शुरुवात

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम उनके लिए महत्वपूर्ण निर्णायक पल साबित हुए।

इन कार्यक्रमों ने रामकली को ग्राम सभा प्रक्रियाओं, पंचायत शासन प्रणाली और सहभागी योजना और विकास के बारे में स्पष्ट समझ दी।

प्रशिक्षण ने अनिश्चितता को स्पष्टता में बदलने और नेतृत्व की भूमिका निभाने के उनके आत्मविश्वास को मजबूत करने में मदद की।

योजनाओं को अमल में लाना

बढ़ते आत्मविश्वास के साथ, रामकली ने गांव की प्रमुख विकास प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित किया।

ग्राम पंचायत विकास योजना (GPDP) समुदाय की सलाह-मशविरों के माध्यम से तैयार की गई, ताकि विकास योजना में गांववालों की जरूरतें पूरी तरह प्रतिबिंबित हों।

उनके नेतृत्व में कई पहलें की गईं जैसे सुरक्षित पेयजल और जल संरक्षण प्रयासों को बढ़ावा देना, सात कक्षाओं वाले स्कूल भवन का निर्माण और शिक्षा सुविधाओं में सुधार, महत्वपूर्ण सामुदायिक केंद्रों में सीमा दीवारों और शौचालयों का विकास, वर्षभर खेती के लिए सौर सिंचाई प्रणाली को बढ़ावा देना

नेतृत्व का नया अध्याय

आज, रामकली सिंह अपने पंचायत का नेतृत्व आत्मविश्वास और संकल्प के साथ कर रही हैं। गृहिणी से सरपंच तक की उनकी यात्रा एक दिन में नहीं हुई, बल्कि यह सीखने, समुदाय के समर्थन और SHG और प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा बनाई गई अवसरों के माध्यम से विकसित हुई।

उनकी कहानी यह दिखाती है कि ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने से समुदाय में मजबूत नेतृत्व और स्थानीय विकास पैदा होता है।

नेतृत्व से सीख

जब ग्रामीण महिलाएँ आत्मविश्वास, ज्ञान और समुदाय का समर्थन प्राप्त करती हैं, तो वे केवल अपनी जिंदगी नहीं बदलतीं, बल्किअपने गांवों के भविष्य को भी आकार देती हैं।

गांव के भविष्य की योजना

नेतृत्व यात्रा – हेमलता वारकडे

नाम: स्मृति हेमलता वारकडे
पद: पंचायत नेता
जिला: मंडला
राज्य: मध्य प्रदेश

आज की समस्याओं से आगे देखना

कई गांवों में शासन अक्सर तत्काल हल किए जाने वाले मुद्दोंसे शुरू होता है-सड़क की मरम्मत, पानी की सप्लाई सुधारना, या ग्रामीणों द्वारा उठाए गए स्थानीय मामलों का समाधान।

जब हेमलता वारकडे ने पंचायत नेतृत्व में कदम रखा, तो उन्हें एहसास हुआ कि ये मुद्दे महत्वपूर्ण हैं, लेकिन येगांव के लंबे समय के विकास का सिर्फ एक हिस्सा हैं।

हर पंचायत निर्णय का असर गांव के भविष्य पर पड़ता है। भविष्य की योजना बनाने के लिए गांव के प्राकृतिक संसाधनों, समुदाय की जरूरतों और विकास प्राथमिकताओं को समझना जरूरी था। हेमलता के लिए चुनौती थी इन सभी पहलुओं को सोच-समझकर जोड़ना।

चुनौती को समझना

कई नई निर्वाचित प्रतिनिधियों की तरह, हेमलता को शुरुआत में स्थानीय शासन की जिम्मेदारियों को समझनेकी चुनौती का सामना करना पड़ा।

गांव का विकास कई संस्थाओं के समन्वय, सरकारी योजनाओं की जानकारी और समुदाय को योजना बनाने में शामिल करने की क्षमता पर निर्भर करता है।

बिना सुव्यवस्थित योजना के, विकास के प्रयास अक्सरअधूरा या अलग-थलग रह सकते हैं।

हेमलता ने महसूस किया कि पंचायत को मजबूत करने का मतलब सिर्फ परियोजनाओं तक सीमित नहीं है, बल्किगांव के दीर्घकालिक विकासके लिए सोचने की आवश्यकता है।

परिवर्तन की शुरुवात

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित “बदलाव का नेतृत्व” प्रशिक्षण कार्यक्रमने पंचायत की योजना बनाने की भूमिका को समझने में मदद की।

प्रशिक्षण में बताया गया कि पंचायत सहभागी योजना और विभागों के साथ समन्वयके माध्यम से कैसे काम कर सकती है।

चर्चाओं और व्यावहारिक सत्रों के जरिए, प्रतिभागियों ने सीखाया कि समुदाय को प्राथमिकताएँ तय करने और विकास पहल तैयार करने में शामिल करना कितना जरूरी है।

हेमलता के लिए यह प्रशिक्षण यह स्पष्ट कर गया कियोजना बनाना पंचायत नेतृत्व का मुख्य कार्यहै।

योजना को शासन में लाना

पंचायत लौटने के बाद, हेमलता नेगांव के भविष्य के विकास पर चर्चा शुरू की।

समुदाय के सदस्य आमंत्रित किए गए कि वेगांव की जरूरतों और विकास की प्राथमिकताओं के बारे में अपने विचार साझा करें। इन चर्चाओं ने समुदाय की चुनौतियों और अवसरों को समझने में मदद की।

ऐसी चर्चाओं के माध्यम से, पंचायत नेविकास को अधिक संरचित और भविष्य-उन्मुख दृष्टिकोणसे देखने का तरीका अपनाया।

साझा दृष्टिकोण को मजबूत करना

जैसे-जैसे योजना बनाने की चर्चाएँ बढ़ीं, गांववासियों मेंसमुदाय के भविष्य को आकार देने की भावनाविकसित हुई।

सिर्फ आज की समस्याओं पर ध्यान देने के बजाय, पंचायत ने सोचना शुरू किया कि कैसे अलग-अलग विकास पहलगांव के जीवन में दीर्घकालिक सुधारमें योगदान दे सकती हैं।

इस बदलाव ने पंचायत की भूमिका कोसाझा निर्णय लेने का मंचबनाने में मजबूती दी।

व्यक्तिगत अनुभव

हेमलता वारकडे के लिए यह यात्रा यह सिखाती है कि ग्रामीण नेतृत्व में दूरदृष्टि का महत्व कितना है।

गांव का विकास सिर्फ आज की समस्याओं को हल करने तक सीमित नहीं है, बल्कि समुदाय कोभविष्य के लिए तैयार करनाभी है।

जब पंचायत नेतृत्वकर्ता योजना और सहभागिता को प्रोत्साहित करते हैं, तो विकास सामूहिक प्रयास बन जाता है, जो समुदाय की आकांक्षाओं द्वारा मार्गदर्शित होता है।

नेतृत्व से सीख

सफल पंचायत नेतृत्वसमुदाय की सहभागिता और दीर्घकालिक योजना को जोड़कर आता है, ताकि विकास पहलगांव के सतत और टिकाऊ प्रगतिमें योगदान दें।

पंचायत को मजबूत बनाना

नेतृत्व यात्रा – शेख फ़ाज़िला

नाम: स्मृति शेख फ़ाज़िला
पद: पंचायत नेता
ग्राम पंचायत: इथेपल्ली
मंडल: चंद्रगिरी
जिला: चित्तूर
राज्य: आंध्र प्रदेश

एक पंचायत और नई उम्मीदें

जब शेख फ़ाज़िला ने पंचायत में अपने पद का कार्यभार संभाला, तो उन्हें पता था कि समुदायअसली बदलाव की उम्मीदकरता है।

गांव वाले अक्सर पंचायत को अपने जीवन के सबसे करीब की संस्था मानते हैं। पानी की आपूर्ति, स्वच्छता, अवसंरचना, शिक्षा और सामुदायिक कल्याण जैसे मुद्दे गांव की चर्चा का हिस्सा होते हैं।

शेख फ़ाज़िला के लिए नेतृत्व में कदम रखना मतलब यह समझना था किपंचायत इन जरूरतों का कैसे समाधान कर सकती है, साथ हीसमुदाय और स्थानीय शासन के बीच विश्वास कैसे मजबूत किया जा सकता है।

चुनौती को पहचानना

स्थानीय शासन में कई जिम्मेदारियों का समन्वय शामिल है-पंचायत सदस्यों के साथ काम करना, सरकारी विभागों के साथ संपर्क में रहना, और समुदाय द्वारा उठाए गए मुद्दों को हल करना।

नई निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए इन जिम्मेदारियों का प्रबंधन शुरू में जटिल लग सकता है।

सशक्त पंचायत के लिए जरूरी है कि प्रशासनिक समझ और समुदाय के साथ रचनात्मक जुड़ावदोनों हों।

शेख फ़ाज़िला ने महसूस किया कि पंचायत को मजबूत बनाने के लिएप्रशासनिक समन्वय और समुदाय की भागीदारीदोनों में सुधार करना होगा।

परिवर्तन की शुरुवात

महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए आयोजित क्षमता निर्माण कार्यक्रममें भाग लेने से उन्हें पंचायत शासन को समझने में मदद मिली।

प्रशिक्षण सत्रों में उन्होंने जाना किपंचायती राज संस्थाओं की संरचना, निर्वाचित नेताओं की जिम्मेदारियां और सहभागी शासन का महत्वक्या है।

यह प्रशिक्षण उनकी नेतृत्व क्षमता को मजबूत करने और स्पष्टता प्रदान करने में मददगार साबित हुआ किपंचायत सामूहिक प्रयासों के माध्यम से समुदाय की जरूरतों को कैसे पूरा कर सकती है।

स्वशासन को मजबूत करना

प्रशिक्षण के बाद, शेख फ़ाज़िला ने पंचायत के संचालन को मजबूत करने पर ध्यान दिया।

उन्होंने विकास प्राथमिकताओं पर पंचायत सदस्यों के बीच चर्चाओं को प्रोत्साहित किया और विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों के अधिकारियों के साथ समन्वय में सुधार किया।

समुदाय के साथ बैठकें और बातचीत यह पहचानने में मदद करती थीं किगांव के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे कौन से हैं।इन चर्चाओं के जरिए पंचायत ने विकास पहलों को स्पष्टता और सहयोगके साथ लागू करना शुरू किया।धीरे-धीरे, पंचायत समुदाय की समस्याओं को हल करने वाला सक्रिय मंचबन गई।

साझा भागीदारी की नई भावना

जैसे-जैसे प्रशासनिक प्रक्रियाएं व्यवस्थित हुई, गांव वाले पंचायत चर्चाओं में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने लगे।

समुदाय के सदस्य अपने विचार साझा करने और सामूहिक निर्णय लेने में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित महसूस करने लगे।

इस बढ़ी हुई भागीदारी ने पंचायत और उसके सेवा क्षेत्र के लोगों के बीचविश्वास और जुड़ावको मजबूत किया।

व्यक्तिगत बदलाव

शेख फ़ाज़िला के लिए नेतृत्व की यह यात्रा पंचायत और समुदाय के बीच विश्वास बनानेकी रही।

जब शासन पारदर्शी, सहभागी और उत्तरदायीहोता है, तो पंचायत सिर्फ प्रशासनिक संस्था नहीं रहती, बल्किएक ऐसा मंच बन जाती है जहां समुदाय मिलकर गांव का जीवन सुधारता है।

नेतृत्व से सीख

स्थानीय शासन में विश्वास को फिर से बनाना सहभागिता से शुरू होता है।

जब पंचायत नेता संचार और समन्वयको मजबूत करते हैं, तो समुदाय विकास में सक्रिय भागीदार बन जाता है।

STATE PANCHAYAT RESOURCE CENTRE
GOVERNMENT OF TRIPURA

अनुभाग
V

जब नेतृत्व बन जाता है

आंदोलन

समय के साथ, पंचायत में नेतृत्व सिर्फ व्यक्तिगत उपलब्धि तक सीमित नहीं रहता। जब महिला मुखियाआत्मविश्वास हासिल करती हैं और अपनी जिम्मेदारियों को प्रभावी रूप से निभाती हैं, तो उनका प्रभाव केवल प्रशासनिक फैसलों तक ही सीमित नहीं रहता।

वे अन्य महिलाओं को सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करती हैं, सामाजिक संवाद को मजबूत करती हैं और समुदाय में नई भागीदारी की दिशा तय करती हैं।

ऐसे समय में, नेतृत्व एकसामाजिक परिवर्तन का उत्प्रेरकबन जाता है। समुदाय अपने पुराने रुढ़िवादी तरीकों पर फिर से सोचने लगता है, ग्राम सभाओं में नई विचारधाराएं सामने आती हैं, और पंचायत का शासन अधिकसमावेशी और सहभागिता पूर्णबन जाता है।

इस अंतिम खंड की कहानियाँ ऐसे ही यात्राओं को दर्शाती हैं। ये बताती हैं कि दृढ़ नेतृत्व समुदायों को सामाजिक चुनौतियों का सामना करने, सामूहिक कार्रवाई को मजबूत करने और नए नियम स्थापित करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

ये सभी कथाएँ एक साथ यह दिखाती हैं किजमीनी लोकतंत्र स्थिर नहीं है। यह उन नेतृत्वकर्ताओं के प्रयासों से विकसित होता है, जो समुदायों को एक समावेशी और बेहतर भविष्य की कल्पना करने और उसे बनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

महिला जिसने अवैध शराब को चुनौती दी

काकोली मुखर्जी की नेतृत्व यात्रा

नाम: काकोली मुर्जी
पद: मुखिया
पंचायत: एगारकुंड (उत्तर)
जिला: धनबाद, झारखंड

एक गांव और छिपी हुई समस्या

पंचायत के कई परिवारों के लिएअवैध शराब की मौजूदगीएक ऐसी समस्या बन गई थी जो चुपचाप लेकिन लगातार लोगों के जीवन को प्रभावित कर रही थी।इससे परिवारों की आय पर असर पड़ता था, घरों में तनाव बढ़ता था और पूरे समुदाय के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता था।

जब काकोली मुखर्जी ने मुखिया का पद संभाला, तो उन्होंने समझ लिया कि इस समस्या का समाधान आसान नहीं होगा। इसके लिए साहस और पूरे समुदाय के सहयोगकी आवश्यकता होगी।

परिवर्तन की शुरुआत

महिला जनप्रतिनिधियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने से काकोली को अपने दायित्वों और भूमिका की बेहतर समझ मिली।

इन प्रशिक्षणों में नेतृत्व, संवाद और सामूहिक प्रयासके महत्व पर विशेष ध्यान दिया गया। साथ ही यह भी बताया गया कि सामाजिक समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब पूरा समुदाय मिलकर आगे आए।

यहीं से काकोली को यह महसूस हुआ किसच्चा परिवर्तन सामूहिक जागरूकता से शुरू होता है।

कार्रवाई की शुरुआत

काकोली ने सबसे पहले गांव की महिलाओं से संवाद शुरू किया। बैठकों का आयोजन किया गया, जहां महिलाएं खुलकर यह साझा कर सकें कि गांव में अवैध शराब की वजह से उन्हें किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

धीरे-धीरे महिलाओं के बीच यह भावना मजबूत होने लगी कि इस समस्या का समाधानमिलकर ही किया जा सकता है। गांव में जागरूकता अभियान चलाए गए और सामुदायिक चर्चाओं के माध्यम से परिवारों को स्वस्थ और सकारात्मक सामाजिक वातावरण बनाने के लिए प्रेरित किया गया।

लगातार संवाद और समुदाय की भागीदारी से पंचायत ने इस समस्या कोसकारात्मक और रचनात्मक तरीके से उठाना शुरू किया।

दिखने लगा परिवर्तन

इन प्रयासों के बाद गांव में अवैध शराब केसामाजिक और आर्थिक दुष्प्रभावोंके बारे में जागरूकता बढ़ने लगी। महिलाएं पहले से अधिक आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखने लगीं और स्थानीय शासन की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं।

अब गांव की बैठकों में चर्चा का केंद्र विकास, शिक्षा और लोगों के कल्याणजैसे मुद्दे बनने लगे।

काकोली का नेतृत्व यह दिखाता है कि स्थानीय प्रतिनिधि संवाद और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से समुदाय को सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ा सकते हैं।

व्यक्तिगत अनुभव

काकोली मुखर्जी के लिए नेतृत्व का अर्थ था - समुदाय की आवाज़ को ध्यान से सुनना और साहस के साथ उसका जवाब देना।

उनकी यात्रा यह दिखाती है किगहराई से जमी सामाजिक समस्याओं का समाधान भी संभव है, जब समुदाय एकजुट होकर दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ता है।

नेतृत्व से सीख

जमीनी स्तर पर नेतृत्व सबसे मजबूत तब बनता है जब समुदाय स्वयं अपनी चुनौतियों को हल करने में सक्रिय रूप से भाग लेता है।

वह गांव जिसने सूखे को हराया

सविता सारंगधर पांडे की नेतृत्व यात्रा

नाम: श्रीमती सविता सारंगधर पांडे
पद: पंचायत नेता
जिला: नासिक
राज्य: महाराष्ट्र

प्रकृति से घिरा एक गांव

यह गांव चारों ओर सेपथरीली पहाड़ियों और सूखी जमीनसे घिरा हुआ था। कई वर्षों से पानी की कमी यहां के लोगों के लिए सबसे बड़ी और लगातार बनी रहने वाली समस्या थी।

गर्मी और सूखे के महीनों में पानी के स्रोत धीरे-धीरे कम हो जाते थे। इससे घरों की रोज़मर्रा की जरूरतें भी प्रभावित होती थीं और खेती भी कठिन हो जाती थी।

किसान परिवारों के लिए तो यह स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण थी। खेती काफी हद तक बारिश और पानी की उपलब्धता पर निर्भर थी। हर साल का सूखा मौसम अपने साथ नई चिंताएं लेकर आता था।

जब सविता सारंगधर पांडे ने पंचायत में अपनी नेतृत्व यात्रा शुरू की, तब उन्होंने समझ लिया कि गांव के जीवन को बेहतर बनाने के लिएपानी की समस्या का समाधान सबसे महत्वपूर्ण होगा।

समस्या को समझना

पानी की कमी केवल पर्यावरण से जुड़ी समस्या नहीं होती। ग्रामीण क्षेत्रों में इसका सीधा असररोज़गार, खेती और परिवारों के जीवन स्तर पर पड़ता है।

ऐसी चुनौतियों का सामना करने के लिए पंचायत कोसामूहिक समझ और मिलकर काम करने की आवश्यकताहोती है। अक्सर इसके लिए समुदाय की भागीदारी और दीर्घकालिक योजना दोनों जरूरी होते हैं।

सविता ने महसूस किया कि इस स्थिति को सुधारने के लिए सबसे पहले लोगों को एक साझा समझ के साथ एकजुट करना होगा।

परिवर्तन की शुरुआत

महिला जनप्रतिनिधियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने से सविता के नेतृत्व के दृष्टिकोण को नई मजबूती मिली।

इन कार्यक्रमों में पंचायत नेताओं की भूमिका पर चर्चा हुई-कि वे कैसे समुदाय को संगठित कर सकते हैं और विकास की दिशा में आगे बढ़ा सकते हैं।

स्थानीय शासन और समुदाय की भागीदारी पर हुई चर्चाओं ने यह स्पष्ट किया कि स्थायी समाधान तभी संभव होते हैं जब लोग मिलकर काम करें। इन अनुभवों ने सविता को यह समझने में मदद की कि पंचायत का नेतृत्वपर्यावरण से जुड़ी चुनौतियों का समाधान भी खोज सकता है।

सामूहिक प्रयास की शुरुआत

प्रशिक्षण के बाद सविता ने गांव मेंपानी के प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षणपर चर्चा शुरू करवाई।

इन चर्चाओं से लोगों में यह समझ बढ़ने लगी कि स्थानीय जल स्रोतों की रक्षा करना और उन्हें बेहतर बनाना कितना जरूरी है।

धीरे-धीरे गांव के लोग भी इन प्रयासों में शामिल होने लगे और पानी बचाने तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने के लिए सामूहिक प्रयास शुरू हुए।

परिवर्तन के संकेत

समय के साथ इन प्रयासों का असर दिखाई देने लगा। पानी के संरक्षण और स्थानीय संसाधनों की देखभाल से गांव की स्थिति में सुधार आने लगा।

खेती को भी इससे सहारा मिला और परिवारों पर पानी की कमी से पड़ने वाला दबाव कम होने लगा।

गांव का प्राकृतिक वातावरण धीरे-धीरे फिर से जीवंत होता दिखाई देने लगा।

गांव के लोगों के लिए यह बदलाव केवल पर्यावरण में सुधार नहीं था, बल्कि यह सामूहिक प्रयास की शक्ति का प्रतीकबन गया।

व्यक्तिगत अनुभव

सविता सारंगधर पांडे के लिए यह अनुभव इस बात का प्रमाण था किनेतृत्व लोगों को साझा लक्ष्य के लिए साथ ला सकता है।

शुरुआत में पर्यावरण से जुड़ी समस्याएं बहुत बड़ी लग सकती हैं, लेकिन जब लोग जागरूकता और दृढ़ संकल्प के साथ मिलकर काम करते हैं, तो परिवर्तन संभव हो जाता है।

इस गांव की यात्रा ने यह दिखाया किसहयोग से ही मजबूती और स्थिरता पैदा होती है।

नेतृत्व से सीख

ग्रामीण विकास की स्थिरता प्राकृतिक संसाधनों की सामूहिक देखभाल पर निर्भर करती है।

जब समुदाय अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए एकजुट होते हैं, तब वे भविष्य के लिए मजबूत आधार तैयार करते हैं।

वह गांव जहाँ महिलाओं ने घूंघट हटाया

डॉ. कश्मीरी की नेतृत्व यात्रा

नाम: डॉ. कश्मीरी
पद: पंचायत नेता
ग्राम पंचायत: लाहली
जिला: रोहतक
राज्य: हरियाणा

एक बैठक जो अलग दिखती थी

जब लोग लाहली गांव में एक सामुदायिक बैठक में पहुंचे, तो उन्हें कुछ अलग दिखाई दिया।

बैठक में महिलाएं आत्मविश्वास के साथ बैठी थीं और गांव के मुद्दों तथा विकास की प्राथमिकताओं पर खुलकर चर्चा कर रही थीं। वे पंचायत सदस्यों से सीधे संवाद कर रही थीं और समुदाय से जुड़े विषयों पर अपनी राय रख रही थीं।

गांव के कई लोगों के लिए यह दृश्य पहले के समय से बिल्कुल अलग था। यह परिवर्तन अचानक नहीं आया था। यह धीरे-धीरे संवाद, जागरूकता और समुदाय के भीतर नेतृत्व के माध्यम से विकसित हुआ था।

चुनौती को समझना

ग्रामीण क्षेत्रों में कई बार सामाजिक परंपराएं यह तय करती हैं कि महिलाएं सार्वजनिक स्थानों पर किस तरह भाग लेंगी।लंबे समय तक घूंघट प्रथा जैसी परंपराओं के कारण महिलाओं की उपस्थिति गांव की सार्वजनिक बैठकों में सीमित रही।

हालाँकि महिलाएं अपने घर और समुदाय में सक्रिय भूमिका निभाती थीं, लेकिन सार्वजनिक मंचों पर उनकी आवाज़ अक्सर सामने नहीं आ पाती थी।

डॉ. कश्मीरी के लिए महिलाओं की भागीदारी को मजबूत बनाना उनकी नेतृत्व यात्रा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।

उनका मानना था किजब महिलाएं आत्मविश्वास के साथ चर्चा और निर्णय-प्रक्रिया में भाग लेंगी, तब गांव का शासन और मजबूत होगा।

परिवर्तन की दिशा

महिला जनप्रतिनिधियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने से इस सोच को और मजबूती मिली। इन प्रशिक्षणों मेंसमावेशी शासनके महत्व पर जोर दिया गया और नेतृत्वकर्ताओं को प्रोत्साहित किया गया कि वे ऐसे अवसर बनाएं जहाँ समुदाय का हर सदस्य भाग ले सके।

विभिन्न गांवों के अनुभवों और उदाहरणों के माध्यम से यह भी बताया गया कि महिलाओं की भागीदारी स्थानीय शासन को अधिक मजबूत बना सकती है। इन विचारों ने डॉ. कश्मीरी को प्रेरित किया कि वे गांव की बैठकों और गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए प्रयास करें।

परिवर्तन को प्रोत्साहन

धीरे-धीरे गांव की महिलाएं सामुदायिक चर्चाओं में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं।

बैठकें और सामुदायिक कार्यक्रम ऐसे स्थान बनने लगे जहाँ महिलाएं अपनी बातआसानी और आत्मविश्वास के साथरख सकें।

जैसे-जैसे उनका आत्मविश्वास बढ़ा, वैसे-वैसे अधिक महिलाएं गांव के विकास और स्थानीय पहलों से जुड़ी चर्चाओं में शामिल होने लगीं।

यह बदलाव इस बात का संकेत था कि समुदाय में महिलाओं की भूमिका को लेकर सोच भी बदल रही है।

भागीदारी की नई संस्कृति

समय के साथ गांव की बैठकों में महिलाओं की उपस्थिति और भागीदारी सामान्य और स्वीकार्य बन गई।

अब पंचायत की चर्चाओं में विभिन्न दृष्टिकोण सामने आने लगे, जिससे निर्णय-प्रक्रिया और अधिक व्यापक और समावेशी हो गई।

कई लोगों के लिए यह परिवर्तन केवल एक सामाजिक बदलाव नहीं था, बल्कि यह एकनई सोच और नई संस्कृति की शुरुआत थी, जहाँ महिलाएं सार्वजनिक जीवन में आत्मविश्वास के साथ भाग ले रही थीं।

व्यक्तिगत विचार

डॉ. कश्मीरी के लिए नेतृत्व का अर्थ था ऐसा वातावरण बनाना जहाँ समुदाय का हर सदस्य बिना झिझक भाग ले सके।

जब सामाजिक बाधाएं धीरे-धीरे कम होने लगती हैं, तब समुदाय और मजबूत तथा समावेशी बन जाता है।

लाहली गांव का यह परिवर्तन दिखाता है किनेतृत्व धीरे-धीरे सामाजिक मान्यताओं को बदल सकता है और भागीदारी के नए अवसर खोल सकता है।

नेतृत्व से सीख

जब महिलाएं सार्वजनिक चर्चाओं में आत्मविश्वास के साथ भाग लेने लगती हैं, तो गांव का शासन अधिक समावेशी बनता है और पूरे समुदाय का सही प्रतिनिधित्व करता है।

एक पंचायत जो महिलाओं को ध्यान में रखकर बनाई गई

राजलक्ष्मी रवि की नेतृत्व यात्रा

नाम: श्रीमती राजलक्ष्मी रवि
पद: पंचायत अध्यक्ष
ग्राम पंचायत: ओलक्कोलपट्टू
जिला: कांचीपुरम
राज्य: तमिलनाडु

शासन से जुड़ा एक सवाल

जब राजलक्ष्मी रवि ने पंचायत अध्यक्ष के रूप में अपना कार्यकाल शुरू किया, तो वे अक्सर अपने आप से एक सरल प्रश्न पूछती थीं-

अगर गांव की आबादी का आधा हिस्सा महिलाएं हैं, तो उनकी जरूरतों को पूरी तरह समझे बिना शासन कैसे प्रभावी हो सकता है?

गांव के दैनिक जीवन में महिलाएं परिवारों के संचालन, बच्चों की शिक्षा, परिवार के स्वास्थ्य और समुदाय के संबंधों को संभालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। फिर भी, कई बार विकास से जुड़ी चर्चाओं में उन चुनौतियों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता था जिनका सामना महिलाएं करती हैं।

राजलक्ष्मी का मानना था कि पंचायत का शासन इस स्थिति को बदल सकता है।

चुनौती को समझना

ग्रामीण समुदायों में महिलाएं अक्सर कई जिम्मेदारियां निभाती हैं-घर का काम, आजीविका से जुड़ी गतिविधियां, बच्चों और परिवार की देखभाल, और सामुदायिक जीवन में भागीदारी।

इसके बावजूद विकास योजनाओं में उनकी सोच और अनुभव को हमेशा पर्याप्त महत्व नहीं मिलता।

राजलक्ष्मी के लिए प्रभावी शासन का अर्थ था यह समझना कि पंचायत के फैसले महिलाओं के रोज़मर्रा के जीवन को किस तरह प्रभावित करते हैं।

इसीलिए महिलाओं की भागीदारी को मजबूत करना और उनकी जरूरतों पर ध्यान देना उनके नेतृत्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।

परिवर्तन की दिशा

महिला जनप्रतिनिधियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने से इस सोच को और मजबूती मिली।

इन प्रशिक्षणों में समावेशी शासनके महत्व पर जोर दिया गया और यह बताया गया कि पंचायत की पहलें समुदाय के

अलग-अलग समूहों को किस तरह लाभ पहुंचा सकती हैं।

अन्य महिला प्रतिनिधियों के साथ चर्चा और अनुभव साझा करने से राजलक्ष्मी को यह समझने में मदद मिली कि पंचायतें महिलाओं की भागीदारी के लिएऔर अधिक सहयोगी वातावरणकैसे बना सकती हैं।

इन विचारों ने गांव के शासन के बारे में उनकी सोच को नई दिशा दी।

समावेशी दृष्टिकोण की शुरुआत

पंचायत में लौटने के बाद राजलक्ष्मी ने गांव की बैठकों और निर्णय-प्रक्रियाओं में महिलाओं की अधिक भागीदारीको प्रोत्साहित करना शुरू किया।

गांव की बैठकों में अब अलग-अलग लोगों की आवाजें सुनाई देने लगीं। विकास से जुड़ी चर्चाओं में महिलाओं और परिवारों से जुड़े मुद्दों पर भी अधिक ध्यान दिया जाने लगा।

संवाद और भागीदारी के माध्यम से पंचायत धीरे-धीरेअधिक समावेशी शासन व्यवस्थाकी ओर बढ़ने लगी।

महिलाओं की भागीदारी को मजबूती

जैसे-जैसे महिलाएं सामुदायिक चर्चाओं में अधिक सक्रिय हुईं, उनकी भागीदारी से गांव के विकास की प्राथमिकताओं को समझने का दायरा भी बढ़ने लगा।

स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता और सामुदायिक कल्याण से जुड़े मुद्दों को पंचायत की चर्चाओं में अधिक महत्व मिलने लगा।

महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने पंचायत को पूरे समुदाय की जरूरतों को बेहतर ढंग से समझने और पूरा करने में मदद की।

व्यक्तिगत विचार

राजलक्ष्मी रवि के लिए पंचायत में नेतृत्व का अर्थ है ऐसे संस्थान बनाना जो समुदाय के हर व्यक्ति की आवाज़ को प्रतिबिंबित करें।

जब महिलाएं निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं, तो गांव का शासन अधिक संवेदनशील, समावेशी और स्थायीबन जाता है।

इस पंचायत की यात्रा यह दिखाती है कि समावेशी नेतृत्व धीरे-धीरे यह बदल सकता है कि समुदाय किस तरह विकास की योजना बनाते हैं और उसे लागू करते हैं।

नेतृत्व से सीख

मजबूत पंचायत वही होती है जो सभी की बात सुने।

जब महिलाओं की सोच और अनुभव शासन के फैसलों को दिशा देते हैं, तब विकास अधिक संतुलित और समुदाय-केंद्रित बनता है।

निष्कर्ष

महिला नेतृत्व के साथ उभरता जमीनी शासन

इस पुस्तक में प्रस्तुत कहानियाँ देश के अलग-अलग हिस्सों से शुरू होती हैं, लेकिन अंततः एक साझा विचार पर आकर मिलती हैं-जमीनी स्तर पर नेतृत्व का मजबूत होना।

गांवों और पंचायतों में चुनी हुई महिला प्रतिनिधि धीरे-धीरे स्थानीय शासन की प्रकृति को नई दिशा दे रही हैं। उनके अनुभव यह दिखाते हैं कि जब लोग आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं, संस्थागत प्रक्रियाओं को समझते हैं और अपने समुदाय के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते हैं, तब नेतृत्व का विकास होता है।

इन कहानियों से जो एक महत्वपूर्ण बात सामने आती है, वह है क्षमता विकास (प्रशिक्षण) का महत्व। कई महिला नेताओं के सामने शुरुआती चुनौती यह नहीं थी कि उनमें समर्पण की कमी थी, बल्कि यह थी कि वे शासन की संस्थागत प्रक्रियाओं से पूरी तरह परिचित नहीं थीं।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने इस अंतर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन कार्यक्रमों ने नेताओं को उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को स्पष्ट रूप से समझने में मदद की, संवाद कौशल को मजबूत किया और पंचायत के कार्यों को संचालित करने के लिए व्यावहारिक जानकारी प्रदान की।

आत्मविश्वास और समझ बढ़ने के साथ कई महिला प्रतिनिधिग्राम सभा की बैठकों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं, अधिकारियों के साथ संवाद करने लगीं और अपनी पंचायतों में विकास से जुड़ी पहलों का मार्गदर्शन करने लगीं।

इन बदलावों से स्थानीय संस्थाओं के कामकाज में सुधार आया और समुदाय के लोगों की निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भागीदारी भी बढ़ी।इन कहानियों में एक और महत्वपूर्ण पहलू सामने आता है-स्थानीय चुनौतियों के समाधान में नेतृत्व की भूमिका।

कई गांवों में महिला प्रतिनिधियों ने समुदाय के साथ मिलकर शासन से जुड़े मंचों में भागीदारी बढ़ाने, सामाजिक संवाद को मजबूत करने और विकास की प्राथमिकताओं के लिए सामूहिक प्रयासों को प्रेरित करने का काम किया।कुछ स्थानों पर नेतृत्वकर्ता संसाधनों के प्रबंधन, बुनियादी ढांचे के विकास और सामाजिक कल्याण से जुड़े मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया।

ये प्रयास जमीनी शासन की एक महत्वपूर्ण सच्चाई को उजागर करते हैं-सार्थक परिवर्तन अक्सर स्थानीय परिस्थितियों को समझकर और लगातार प्रयास करने से ही संभव होता है। पंचायतें तब सबसे प्रभावी ढंग से काम करती हैं जब उनके नेता अपने समुदाय की जरूरतों को समझते हैं और नागरिकों तथा संस्थाओं के साथ मिलकर समाधान खोजते हैं।

ये कहानियाँ यह भी दिखाती हैं कि शासन में महिलाओं की भागीदारी का सामाजिक प्रभाव भी व्यापक होता है।

जब महिलाएँ नेतृत्व की भूमिका निभाती हैं, तो वे अन्य महिलाओं और वंचित समूहों को भी समुदाय की चर्चाओं और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करती हैं। इससे शासन अधिक समावेशी बनता है और स्थानीय संस्थाओं का लोकतांत्रिक स्वरूप मजबूत होता है।

साथ ही, ये यात्राएँ हमें यह भी याद दिलाती हैं कि नेतृत्व का विकास एकलगातार चलने वाली प्रक्रियाहै। पंचायत राज संस्थाओं की प्रभावशीलता केवल प्रतिनिधित्व पर ही नहीं, बल्कि निरंतर प्रशिक्षण, संस्थागत सहयोग और निर्वाचित प्रतिनिधियों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान पर भी निर्भर करती है।

जैसे-जैसे भारत अपने विकेंद्रीकृत शासन तंत्र को और मजबूत कर रहा है, महिला निर्वाचितप्रतिनिधियों की भूमिका जमीनी लोकतंत्र के विकास में और अधिक महत्वपूर्ण होती जाएगी। उनके अनुभव नीति-निर्माताओं, प्रशासकों और विकास से जुड़े कार्यकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण सीख प्रदान करते हैं, जो स्थानीय संस्थाओं के कामकाज को बेहतर बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

इस संकलन में शामिल कहानियाँ केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों का वर्णन नहीं हैं।

ये एक व्यापक परिवर्तन की कहानी भी प्रस्तुत करती हैं- जहाँ महिला निर्वाचित प्रतिनिधि ग्रामीण भारत मेंअधिक सहभागी, जवाबदेह और समावेशी शासन व्यवस्थाके निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

इन अनुभवों को साझा करके यह पुस्तक महिला जनप्रतिनिधियों के योगदान को सम्मान देने और उनके नेतृत्व को आगे बढ़ाने के प्रयासों को प्रोत्साहित करने का प्रयास करती है।

अंततः, लोकतंत्र की ताकत इस बात में निहित होती है कि नागरिक अपने साझा भविष्य को बनाने मेंसार्थक रूप से भाग ले सकें।

पंचायती राज संस्थाएँइस भागीदारी के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करती हैं, और इन संस्थाओं में महिलाओं का बढ़ता हुआ नेतृत्व भारत की लोकतांत्रिक यात्रा को और अधिक समृद्ध और मजबूत बना रहा है।

www.mehraimpressions.com